हरिभूमि
महेन्द्रगढ़-नारनौल भूमि
रोहतक, रविवार 1 फरवरी 2026

11 नए जी राम जी कानून में श्रमिकों के काम की...

12 महेंद्रगढ़ जिले में किसान परंपरागत खेती को...

सुप्रीम कोर्ट ने स्कूलों में लड़कियों को फ्री में सैनेटरी पैड देने के दिए आदेश

जिले में एक भी जगह सार्वजनिक स्थान पर नहीं सैनेटरी पैड मशीन
स्वास्थ्य विभाग में योजना बंद, आंगनबाड़ी और स्कूलों में उपलब्ध

हरिभूमि न्यूज ⏭ नारनौल

सुप्रीम कोर्ट ने किशोरी व महिलाओं के लिए सैनेटरी पैड निशुल्क उपलब्ध करवाने के निर्देश दिए है। यह मामला चार साल से कोर्ट में विचाराधीन था। सुप्रीम कोर्ट के इस एतिहासिक फैसले से सभी ने सराहना की है। सैनेटरी पैड से जुड़े सरकारी योजनाओं पर ध्यान दें तो इससे तीन विभाग सीधे तौर पर जुड़े है।

इसमें महिला एवं बाल विकास विभाग, स्वास्थ्य विभाग और शिक्षा विभाग शामिल है। तीनों ही विभाग से जब इस मामले में बातचीत की गई तो सामने आया कि स्वास्थ्य विभाग में चल रही बाल किशोर योजना कई साल से बंद है। इस योजना के तहत पहले आशा वर्कर घर घर और स्कूलों में जाकर किशोरी व महिलाओं को निशुल्क सैनेटरी पैड बांटकर आती है, अब ऐसा नहीं है। शिक्षा विभाग की बात करें तो स्कूलों में सैनेटरी पैड उपलब्ध है, पर इसका प्रचार प्रसार कम है। कुछ चुनिंदा सरकारी स्कूलों में ही पैड को डिस्टाय करने की हिटरनुमा मशीन है।

अधिकांश स्कूलों में यह सुविधा नहीं है। तीसरा विभाग महिला एवं बाल विकास विभाग है। यह विभाग सिर्फ बीपीएल परिवार से जुड़ी किशोरी व महिलाओं को ही सैनेटरी पैड उपलब्ध करवाता है। यह पैड आंगनबाड़ी केंद्र के माध्यम से बांटे जाते है। दूसरी बात, जिला में कहीं भी सार्वजनिक जगह पर सैनेटरी पैड संबंधित मशीन नहीं है।

आंगनबाड़ी केंद्र के तहत बीपीएल से जुड़ी महिलाओं को मिल रहे फ्री में पैड

यहां जिला महिला एवं बाल विकास विभाग की मुखिया का पद खाली है। रेवाड़ी से एडिशनल चार्ज जिला महिला एवं बाल विकास अधिकारी शालू यादव संभाल रही है। उन्होंने हरिभूमि को बताया कि बीपीएल (गरीबी रेखा से नीचे) परिवारों की महिलाओं और किशोरियों के स्वास्थ्य एवं स्वच्छता को ध्यान में रखते हुए महिला एवं बाल विकास विभाग द्वारा एक अहम पहल की जा रही है। विभाग के माध्यम से जरूरतमंद महिलाओं और किशोरियों को निःशुल्क सैनेटरी पैड उपलब्ध कराए जा रहे हैं। यह वितरण आंगनबाड़ी केंद्रों के जरिए किया जा रहा है, ताकि ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों की अधिक से अधिक लाभार्थी तक यह सुविधा पहुंच सके।

स्वास्थ्य विभाग : कई सालों पहले बंद हो चुकी बाल किशोरी योजना

स्वास्थ्य विभाग में जिला डिप्टी सिविल सर्जन (स्कूल हेल्थ)डॉ विजय यादव ने बताया कि स्वास्थ्य विभाग ने कई साल पहले बाल किशोरी योजना थी। उस योजना के तहत आशा वर्कर के माध्यम से स्कूल व घर घर जाकर किशोरी व महिलाओं को निशुल्क सैनेटरी पैड वितरित करती थी। अभी यह योजना बंद है।

शिक्षा विभाग : सभी स्कूलों में नहीं है डिस्टोय मशीन

शिक्षा विभाग के अधीन सरकारी व निजी प्राइवेट स्कूल जिला में करीब 500 है। सरकारी स्कूलों के लिए शिक्षा विभाग सैनेटरी पैड उपलब्ध करवाता है। अधिकांश बार तो यह पैड चंडीगढ़ से आते है। फिर भी कई बार उपलब्ध नहीं हो तो स्कूल मुखियाओं को यह हिदायत दी हुई है कि स्कूल फंडों से सैनेटरी पैड की उपलब्धता सुनिश्चित करें। स्कूलों में हेल्थ एंबेस्डर भी बनाए गए है। डीईओ विश्वेशवर कौशिक ने हरिभूमि को बताया कि सैनेटरी पैड को डिस्टाय करने के लिए कुछ स्कूलों में हीटर नुमा मशीन है। सभी में नहीं है। जहां तक अलग शौचालय की बात है तो सभी स्कूलों में छात्राओं के लिए अलग से शौचालय बनाए गए है। कुछ शौचालय की हालत खराब होने की वजह से उच्च अधिकारियों के पास डिमांड भेजी गई है।

खबर संक्षेप

ट्रेलर की टक्कर से पैदल जा रहे व्यक्ति की मौत

नारनौल। बीती शाम को गांव नायन के बस स्टैंड के समीप हुए सड़क हादसे में पैदल जा रहे व्यक्ति की मौत हो गई। मृतक की पहचान करीब 44 वर्षीय विजय कुमार निवासी गांव नायन के रूप में हुई है। मृतक के भाई अमर सिंह ने बताया कि वह और उसका भाई विजय कुमार खेत में जा रहे थे। जब वे नायन बस अड्डे पर पहुंचे तो अमर सिंह वहीं रुक गया, जबकि विजय कुमार थोड़ी दूर आगे पैदल चला गया। इसी दौरान पीछे से एक ट्रेलर तेज रफ्तार और लापरवाही से चलता हुआ आया और पैदल जा रहे विजय कुमार को जोरदार टक्कर मार दी।

सिहमा में हिंदू सम्मेलन आज

मंडी अटेली। हिंदू जागरण की दिशा को नई ऊर्जा एवं चेतना प्रदान करने के लिए सर्व हिंदू सनातन संस्कृति, सनातन धर्म और सामाजिक एकता के प्रतीक विशाल हिंदू सम्मेलन एक फरवरी को बाबा खेतानाथ स्कूल सिहमा में सुबह 11 बजे आयोजित किया जा रहा है। जानकारी देते हुए विजय सिंह ने बताया कि यह कार्यक्रम बाबा खेतानाथ हिंदू सम्मेलन समिति सिहमा मण्डल द्वारा किया जा रहा है। इस हिंदू सम्मेलन में संस्कृति, संस्कारों और गौरवशाली इतिहास पर चिंतन होगा। इस कार्यक्रम में क्षेत्र के विभिन्न गांवों के ग्रामीण बड़ी संख्या में उपस्थित रहेंगे।

स्वास्थ्य निरीक्षक की सेवानिवृत्ति

कनीना। स्वास्थ्य विभाग में कार्यरत स्वास्थ्य निरीक्षक राजकुमार चौहान 32 वर्ष की सेवा के बाद शनिवार को सेवानिवृत्त हो गए। वे पीएचसी भोजावास में कार्यरत थे तथा सेवाकाल के दौरान उन्होंने विभिन्न स्थानों पर सेवाएं दी। उनकी सेवानिवृत्ति पर विदाई समारोह का आयोजन किया गया। जिसमें उप नागरिक अस्पताल कनीना के प्रवर चिकित्सा अधिकारी डॉ. रेणू वर्मा, बहुउद्देशीय कार्यकर्ता अनिल रसूलपूरियां, डॉ. नेहा एवं डॉ. दिनेश द्वारा राजकुमार चौहान को पगड़ी पहनाकर व स्मृति चिन्ह प्रदान कर सम्मान किया गया।मौके पर मुकेश चौहान, मुकेश बाई, गुलाब सिंह, मा. सूरत सिंह, शारदा, सुशीला आदि मौजूद थे।

मरीजों एवं तिमारदारों को हो रही परेशानी

'ट्रामा सेंटर' तो है, पर सीटी स्कैन और एमआरआई जैसी सुविधाओं का अभाव

- जांच एवं उपचार की पर्याप्त सुविधाएं नहीं होने के चलते ट्रामा सेंटर होने के बावजूद घायलों को हायर सेंटर के लिए कर दिया जाता है रेफर
- ट्रामा सेंटर आने वाले घायलों का औसत लगभग 10 मरीज है प्रतिदिन, जो महीने का लगभग 300 मरीज बनता है, इनमें से करीब 200 मरीजों को कर दिया जाता है रेफर

राजकुमार ⏭ नारनौल

जिले के नागरिक अस्पताल में स्थापित ट्रामा सेंटर से लोगों को बड़ी राहत मिलने की उम्मीद थी, लेकिन उद्घाटन के महीनों बाद भी यह केंद्र जरूरी संसाधनों के अभाव में अपने उद्देश्य को पूरा नहीं कर पा रहा है। आधुनिक सुविधाओं के बिना चल रहा यह ट्रामा सेंटर गंभीर रूप से घायल मरीजों के लिए महज एक रेफरल सेंटर बनकर रह गया है, जिससे आमजन में रोष और निराशा बढ़ती जा रही है।

बता दें कि प्रदेश के मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी ने गत 16 नवंबर 2025 को अनाज मंडी नारनौल में आयोजित महाराजा शूरसैनी जयंती समारोह के दौरान इस ट्रामा सेंटर का उद्घाटन किया था। उस समय इसे जिले के लिए एक बड़ी स्वास्थ्य उपलब्धि बताया गया था, लेकिन जमीनी हकीकत यह है कि ट्रामा सेंटर में आज भी न तो सीटी स्कैन की सुविधा है और न ही एमआरआई जांच उपलब्ध है।

गंभीर मरीजों की जांच के लिए इन्हीं सुविधाओं की सबसे अधिक आवश्यकता होती है। सबसे चिंताजनक स्थिति यह है कि ट्रामा सेंटर में न्यूरो सर्जन की तैनाती नहीं है। सिर में गंभीर चोट (हेड इंजरी) के मामलों में न्यूरो सर्जन की भूमिका बेहद अहम होती है, लेकिन यहां ऐसे मरीजों को बिना प्राथमिक उपचार के ही हायर सेंटर के लिए रेफर कर दिया जाता है और तिमारदार मजबूरीवश घायल को जयपुर, गुरुग्राम, रोहतक या रेवाड़ी ले जाने को मजबूर होते हैं। इसके अलावा अस्पताल में एमडी मेडिसन चिकित्सक की भी भारी कमी बताई जा रही है, जिससे गंभीर रोगियों के इलाज में बाधा आ रही है।

नारनौल। ट्रामा सेंटर भवन। फोटो : हरिभूमि

यह कहते हैं चिकित्साधिकारी

एमआरआई एवं न्यूरो की सुविधाएं तो नहीं हैं। वैसे भी यह उच्च स्तरीय सुविधाएं बड़े अस्पतालों में भी बमुश्किल ही मिलती हैं। सरकार यह सुविधाएं अब पीपीपी मोड पर उपलब्ध करवाती है। सीटी स्कैन के लिए टेंडर लगे हुए हैं। वैसे आज शनिवार को ही विधायक ओमप्रकाश यादव यहां आए थे, जिन्हें यहां की मूलभूत जरूरतों से अवगत कराया गया है। 100 बैड का अस्पताल होने पर इसे 200 बैड में तब्दील करने की मांग की गई है, ताकि सुविधाएं बढ़ सकें। डाक्टर एवं स्टॉफ एवं जांच सुविधाएं मिल सके। कोशिश की जा रही है, जल्दी ही सुधार आने की उम्मीद है।

-डा. सरजीत सिंह, आरएमओ, ट्रामा सेंटर, नारनौल

हेड इंजरी और चेस्ट इंजरी के मामलों में स्थिति और भी गंभीरः प्रतिदिन सड़क दुर्घटनाओं, हादसों और अन्य आकस्मिक घटनाओं में घायल मरीज नारनौल के ट्रामा सेंटर लाए जाते हैं, लेकिन जांच व इलाज की पर्याप्त सुविधा न होने के कारण उन्हें समय पर समुचित उपचार नहीं मिल पा रहा।

ट्रामा सेंटर में आने वाले घायलों का औसत लगभग 10 मरीज प्रतिदिन है, जो महीने का लगभग 300 मरीज बनता है। इनमें से करीब 200 मरीजों को रेफर कर दिया जाता है। खासकर हेड इंजरी और चेस्ट इंजरी के मामलों में स्थिति और भी गंभीर हो जाती है। डॉक्टर मजबूरी में ऐसे मरीजों को तुरंत उच्च चिकित्सा संस्थानों में रेफर कर देते हैं, जिससे 'गोल्डन आवर' में मिलने वाला जीवनरक्षक उपचार छूट जाता है।

यह बोले लोग

स्थानीय लोगों राहुल, विजय, संजय, नरेश आदि का कहना है कि यदि ट्रामा सेंटर में सीटी स्कैन, एमआरआई और विशेषज्ञ डॉक्टरों की व्यवस्था कर दी जाए तो सैकड़ों लोगों की जान बचाई जा सकती है। जिले से प्रतिदिन बड़ी संख्या में मरीज रेफर होना इस बात का प्रमाण है कि ट्रामा सेंटर अपने मूल उद्देश्य से भटक गया है।

तिमारदार होते रहते हैं परेशान

मरीजों के साथ आए परिजनों को भी भारी परेशानी का सामना करना पड़ रहा है। कई बार आर्थिक स्थिति कमजोर होने के कारण निजी अस्पतालों में इलाज कराना उनके लिए संभव नहीं होता, वहीं सरकारी अस्पताल में भी समुचित सुविधा न मिलने से वे असहाय महसूस करते हैं। एंबुलेंस, समय और धन-तीनों की मार झेलनी पड़ती है।

स्वास्थ्य मंत्री इसी जिले से

विडंबना यह भी है कि प्रदेश की स्वास्थ्य मंत्री आरती सिंह स्वयं जिले की अटेली विधानसभा से विधायक हैं। इसके बावजूद महेंद्रगढ़ जिले के सबसे बड़े सरकारी अस्पताल में इस तरह की बुनियादी स्वास्थ्य सुविधाओं का अभाव होना कई सवाल खड़े करता है।

नारनौल। प्रदर्शन उपरांत निगम अधिकारी को ज्ञापन सौंपते बिजली कर्मचारी।

बिजली कर्मचारियों ने की भूख हड़ताल

ऑनलाइन ट्रांसफर पॉलिसी के विरोध में प्रदर्शन

हरिभूमि न्यूज ⏭ नारनौल

ऑल हरियाणा पॉवर कारपोरेशन यूनियन सर्कल नारनौल के कर्मचारियों द्वारा राज्य कमेटी के आह्वान पर एसई ऑफिस के प्रांगण में ऑनलाइन ट्रांसफर पॉलिसी के विरोध में सुबह 11 बजे से शाम चार बजे तक सांकेतिक भूख हड़ताल एवं प्रदर्शन का आयोजन किया, जिसकी अध्यक्षता सर्कल सचिव किरोड़ीमल सैनी ने की।

आंदोलनकारी कर्मचारियों को संबोधित करते हुए सर्कल सचिव किरोड़ीमल सैनी ने कहा कि हरियाणा सरकार द्वारा बनाई गई ऑनलाइन पॉलिसी के बिजली निगम में दूरगामी दुष्परिणाम निकलेंगे, क्योंकि बिजली निगम एक तकनीकी, संवेदनशील एवं आवश्यक सेवाओं से जुड़ा विभाग है। इस विभाग की कार्यप्रणाली क्षेत्र विशेष की विद्युत संरचना ट्रांसमिशन लाइनों, सब स्टेशनों एवं उपकरणों की गहरी जानकारी पर आधारित है।

एएलएम, एलएम, जेई तथा क्लर्क आदि कर्मचारियों को उनके क्षेत्र की तकनीकी विशेषताओं का अच्छा अनुभव होता है, जो कि सुरक्षा एवं कार्यकुशलता के लिए अत्यंत आवश्यक है। ऐसे में ऑनलाइन पॉलिसी को बिजली निगम में लागू करने के गंभीर परिणाम हो सकते हैं। इसके अतिरिक्त ऑल हरियाणा पॉवर कारपोरेशन वर्कर यूनियन की विशेष मांग है कि सरकार तुरंत प्रभाव से एचकेआरएन के कर्मचारियों को नियमित करे।

ये रहे मौजूद

इस प्रदर्शन में सुरेश सैनी, महेश यादव, विनोद कुमार, कृष्ण कुमार, विकास यादव, ताराचंद, पूर्णसिंह, खगेश, भूपेंद्र, अशोक माटी, अमित, दिनेश कुमार, नवीन कुमार आदि कर्मचारी एवं पदाधिकारी उपस्थित रहे।

गुरुग्राम के नितिन विहार में रह रहे पांच पर केस

हरिभूमि न्यूज ⏭ नारनौल

- पीड़िता का आरोप है कि पति ने कई बार उसे जान से मारने की कोशिश की

एक विवाहिता ने अपने ससुराल पक्ष पर दहेज उत्पीड़न, मारपीट, जान से मारने की कोशिश और जबरन बार-बार गर्भपात कराने जैसे गंभीर आरोप लगाते हुए एसपी नारनौल को शिकायत दी, जिस पर महिला थाना पुलिस ने पति समेत पांच लोगों के खिलाफ विभिन्न धाराओं में मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है।

महेंद्रगढ़ की शास्त्री कॉलोनी निवासी पीड़िता ने बताया कि एसपी नारनौल को शिकायत दी थी। शिकायत में बताया कि उसकी शादी एक फरवरी 2017 को गुरुग्राम के नितिन विहार निवासी मोहित से हिंदू रीति-रिवाज से हुई थी। तब शादी में उसके माता-पिता ने हैसियत से बढ़कर करीब 50-60 लाख रुपये खर्च किए थे और स्कॉर्पियो गाड़ी, सोना-चांदी के आभूषण तथा नगदी दी थी। जबकि रिश्ता तय करते समय दहेज की कोई मांग नहीं बताई गई थी, लेकिन शादी से कुछ दिन पहले गाड़ी, सोना और नकदी की मांग रखी गई।

पीड़िता का आरोप है कि शादी के बाद सास, ससुर, पति मोहित, ननद और ननदोई उसे कम दहेज लाने के ताने देते थे और आए दिन उसके साथ मारपीट की जाती थी। कई बार खाना नहीं दिया जाता और कमरे में बंद रखा जाता था। पहली संतान बेटी होने के बाद भी उत्पीड़न कम नहीं हुआ। पीड़िता ने आरोप लगाया कि दूसरी बार गर्भवती होने पर साजिश के तहत जबरन गर्भपात कराया गया। ननद ने डॉक्टरों से संपर्क करके गलत फायदा उठाया। शिकायत में आरोप है कि इसके बाद भी मायके से नकदी लाने का दबाव बनाया जाता रहा। वर्ष 2023 में ननद की शादी के दौरान भी उससे नकद और गहने मंगवाए गए।

पीड़िता के अनुसार 2024 में फिर से गर्भवती होने पर दोबारा बिना सहमति के गर्भपात कराया गया, जिससे उसका स्वास्थ्य गंभीर रूप से बिगड़ गया। लगातार प्रताड़ना और इलाज न मिलने से वह टीबी जैसी बीमारी से ग्रस्त हो गई। पीड़िता का आरोप है कि पति ने कई बार उसे जान से मारने की कोशिश की।

बसीपुर व तलोट के बाद अब घाटासेर के किसानों ने दिया धरने को समर्थन

जमीनों का मुआवजा बढ़वाने की मांग को लेकर किसानों का धरना जारी

हरिभूमि न्यूज ⏭ नारनौल

प्रस्तावित मल्टी मॉडल लॉजिस्टिक हब के निर्माण को लेकर अधिगृहित की गई जमीन का मुआवजा बढ़वाने की मांग को लेकर बसीरपुर के किसानों का धरना लगातार जारी है। करीब दस दिनों से जारी धरने पर बैठे किसानों को आसपास के गांवों का भी समर्थन मिल रहा है। इसी कड़ी में गांव घाटासेर के किसानों ने शनिवार को धरनास्थल पर पहुंचकर आंदोलन का समर्थन किया और सरकार के खिलाफ नारेबाजी की। इसमें केंद्रीय मंत्री राव इंद्रजीत समर्थक भी शामिल रहे।

गौर हो कि यह मल्टी मॉडल लॉजिस्टिक हब गांव बसीरपुर, तलोट और घाटासेर की तीन गांवों की जमीन पर बनाया जा रहा है। इस परियोजना की घोषणा वर्ष 2016 में की गई थी। बाद में किसानों की जमीन अधिगृहित की गई।

किसानों का कहना है कि उनकी जमीन का उचित मुआवजा नहीं दिया गया, जिससे वे खुद को ठगा हुआ महसूस करते हैं। धरने पर बैठे किसानों का कहना है कि उन्हें प्रति एकड़ जमीन का मुआवजा मात्र 30 लाख रुपये दिया गया है, जबकि मार्केट वेल्यू और संभावनाओं को देखते हुए उन्हें करीब 65 लाख रुपये प्रति एकड़ मुआवजा मिलना चाहिए था। किसानों का कहना है कि जिस समय मुआवजा दिया गया, उस समय उनसे सहमति पत्रों पर हस्ताक्षर करवा लिए गए और जमीन अधिग्रहण के नियमों के अनुसार मुआवजा तय नहीं किया गया।

किसानों ने सरकार से मांग की है कि उन्हें पूरा और न्यायसंगत मुआवजा दिया जाए। उनका कहना है कि जब तक उनकी मांगें पूरी नहीं होगी, तब तक धरना जारी रहेगा। इस मुद्दे को लेकर किसानों में सरकार के प्रति रोष बना हुआ है।

नारनौल। बसीरपुर में धरना देते किसान। फोटो : हरिभूमि

धरने में इन्होंने लिया भाग

धरने के समर्थन में घाटाशेर से पहुंचे लोगों ने किसानों के साथ एकजुटता दिखाई। इस मौके पर राव इंद्रजीत सिंह समर्थक महेश यादव घाटाशेर, सुरेश कुमार, रामचंद्र घाटाशेर, छोटूराम, बिल्ले पहलवान, सत्यनारायण शर्मा, बिजेंद्र ठेकेदार, रोहताश, भीमसिंह, प्रेम, धर्मपाल, कृष्ण, मनोज, राकेश और सुमित सहित अनेक ग्रामीण मौजूद रहे।

सिंचाई विभाग के लंबित कामों को पूरा करवाने के लिए पूर्व सिंचाई मंत्री की पहल

गोठड़ी, ढाणी बिसना व बलाहा कलां के जल भंडारों का काम हो पूरा

हरिभूमि न्यूज ⏭ नारनौल

सिंचाई विभाग की ओर से नांगल चौधरी हल्के में पिछले 10 वर्षों में पूर्व सिंचाई मंत्री डाक्टर अभय सिंह यादव के कार्यकाल में कई बड़ी परियोजनाओं पर काम हुआ है। परंतु उसमें से कुछ काम अभी भी अधूरे पड़े हैं जिनकी वजह से किसानों को उनका वांछित लाभ नहीं मिल पा रहा।

विशेषकर डॉक्टर अभय सिंह यादव की पहल पर नांगल चौधरी हल्के के दो दर्जन से अधिक गांवों में बनाए गए पक्के जल भंडारों की परियोजना में कुछ गांवों का काम अभी अधूरा है। इस विषय में डॉक्टर अभयसिंह यादव ने विशेषकर गोठड़ी, ढाणी बिसना (नायन) एवं बलाहा कलां के जल भंडारों के बारे में मुख्य अभियंता लिफ्ट कैनाल यूनिट को पत्र लिखकर सूचित किया है कि केवल पंप चेंबर का कुछ काम बकाया होने के कारण पिछले कई महीनों से इन दोनों गांवों के जल भंडारों में पानी नहीं भर पाया है। इसी कारण इन गांवों में इन जल भंडारों से सरसों की सिंचाई नहीं की जा सकी।

उन्होंने कहा कि इसी तरह बलाह कलां गांव में बनाए गए ऐसे ही पक्के जल भंडार का कनेक्शन बिना पानी की सप्लाई की उपलब्धता को सुनिश्चित किए बलाहा माइनर की टेल से कर दिया है। उन्होंने पत्र में लिखा है कि जब दोचाना माइनर की टेल पर ही पानी की उपलब्धता बहुत कम होती है तो बलाहा माइनर जो कि दोचाना माइनर की टेल से निकलती है। उसकी टेल से वॉटर स्टोरेज टैंक का कनेक्शन विभाग द्वारा करना व्यवहारिकता से परे है।

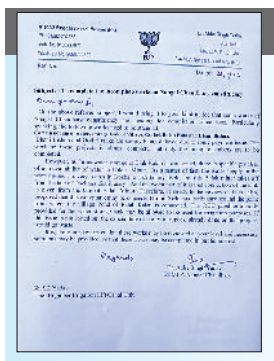

नारनौल। मुख्य अभियंता लिफ्ट कैनाल यूनिट को लिखा गया पत्र।

यह दिया सुझाव

उन्होंने सुझाव दिया है कि वर्तमान डाली गई आरसीसी पाइप लाइन को किसानों द्वारा सिंचाई के लिए इस्तेमाल किया जा सकता है परंतु पक्के जल भंडार का कनेक्शन मुख्य नहर से किया जाए जहाँ से बलाह गांव का जोहड़ वर्तमान में भरा जा रहा है। उन्होंने मुख्य अभियंता से इन सारे कामों को व्यक्तिगत रूप से देखने के लिए कहा है तथा साथ ही अनुरोध किया है कि इन तीनों ही जल भंडारों में पानी भरने की व्यवस्था अविलंब की जाए। उन्होंने कहा कि यह हर्ष का विषय है कि जिन गांवों में इन जल भंडारों में पानी वर्षा की ऋतु में भर दिया गया था, उन गांवों में प्रत्येक जल भंडार से लगभग 400 एकड़ जमीन सरसों की फ़सल की सिंचाई हुई है जो इस क्षेत्र के लिए एक वरदान साबित हुआ है। यह योजना किसान को प्रतिवर्ष समृद्धि की ओर ले जाएगी। उन्होंने उम्मीद जताई कि सिंचाई विभाग उनकी बातों को गंभीरता से लेते हुए इस पर अविलम्ब कार्रवाई करेगा।

SADASUKH MEMORIAL SCHOOL
AFFILIATED TO CBSE NEW DELHI
REQUIREMENT
PGT- Physics, Chemistry, Biology, Maths, Political Science, History, Physical Edu., Hindi, English
TGT- English, Science, Maths, Hindi, Sanskrit, Computer Social Science (Eng. Medium), Art & Craft
PRT- English, EVS, Maths, Mother Teacher, Computer
COACH- Atheletic, Vollyball, Badminton
NON TEACHING STAFF Receptionist, Accountant, Computer Operator Driver, Conductor, Peon, Gardener, Sweeper
Salary No Bar for Deserving Candidates
WALK-IN-INTERVIEW
on Sunday, 01st Feb. 2026 10:00 am to 02:00 pm
VENUE: GAHRA ROAD, KANINA (M/GARH)
Contact for - 9266014001, 9306259822, 9991810146, 9416150682

क्या कृषि नीति में बदलाव के बीज बो पाएगा बजट

उम्मीद है कि एक फरवरी को आने वाला बजट इस बार खेती को सिर्फ कल्याणकारी योजना न मानकर, इसे एक उत्पादक और तकनीकी-सक्षम क्षेत्र के रूप में विकसित करेगा।

बजट 2026 भारत की कृषि नीति में बदलाव के बीज बो सकता है। यह ऐसा क्षेत्र है जो भारत–अमेरिका व्यापार वार्ताओं में एक प्रमुख विवाद बिंदु बनकर उभरा है। खेती के मुद्दे पर ही प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने पलटवार करने का फैसला किया। 7 अगस्त को दिल्ली में ट्रंप द्वारा टैरिफ की घोषणा के एक दिन बाद, उन्होंने कहा कि भारत अपने किसानों, डेयरी क्षेत्र और मछुआरों के कल्याण से कभी समझौता नहीं करेगा। अब सबकी निगाहें इस बात पर हैं कि सीतारमण अपने बही-खाते में भारत के अन्नदाताओं के लिए क्या खोलती हैं। क्या बजट 2026 केवल लेखा-जोखा संतुलित करेगा या घरेलू प्राथमिकताओं और वैश्विक व्यापार दबावों के बीच फंसे इस क्षेत्र के लिए किसी बड़े पुनर्संतुलन का संकेत देगा।

समय की आवश्यकता

2050 तक भारत की जनसंख्या 1.6 अरब तक पहुंचने का अनुमान है। ऐसे में खाद्य और पोषण सुरक्षा सुनिश्चित करने के साथ ही सतत विकास तथा एसडीजी लक्ष्यों के अनुरूप देश की कृषि निर्यात क्षमता को खोलना और भी महत्वपूर्ण हो जाता है। विशेषज्ञ इस चुनौती से निपटने के लिए 4पी दृष्टिकोण की जरूरत बताते हैं।

प्रोड्यूज (उत्पादन): अनुसंधान एवं विकास में निवेश के जरिए अधिक उत्पादन

प्रोसेस (प्रसंस्करण): मूल्य संवर्धन और अवसंरचना के माध्यम से अधिक उत्पादन मूल्य

प्राइस (कीमत): कुशल आपूर्ति श्रृंखला और बेहतर मूल्य प्राप्ति के जरिए अधिकतम मूल्य

प्रोटेक्ट (संरक्षण): दीर्घकालिक स्थिरता के लिए संसाधनों की लचीली और टिकाऊ सुरक्षा

कृषि क्षेत्र
सेंट्रल डेस्क

प्रतिस्पर्धात्मकता बढ़ाएं

2026 में भारत वैश्विक मंच पर दो प्रमुख उपलब्धियों के साथ प्रमुख भूमिका में होगा। संयुक्त राष्ट्र ने 2026 को अंतरराष्ट्रीय महिला किसान वर्ष घोषित किया है, जो कृषि-खाद्य प्रणालियों में महिलाओं की महत्वपूर्ण भूमिका और कृषि व ग्रामीण आजीविका में लैंगिक अंतर को पाटने की तत्काल आवश्यकता को मान्यता देता है। भारत अपनी अध्यक्षता में ब्रिक्स शिखर सम्मेलन की मेजबानी करेगा, जो अंतरराष्ट्रीय सहयोग को मजबूत करने का अवसर देगा। आगामी केंद्रीय बजट महिला-नेतृत्व वाली कृषि पहलों के लिए संसाधन आवंटित कर व वैश्विक कृषि-खाद्य निर्यात में भारत की प्रतिस्पर्धात्मकता बढ़ाने वाले कार्यक्रमों को सशक्त बनाएगा।

अधिक धन की संभावना

पिछले केंद्रीय बजट में कृषि और संबद्ध क्षेत्रों के लिए आवंटन वित्त वर्ष 2025 में 1.52 लाख करोड़ और वित्त वर्ष 2026 में 1.37 लाख करोड़ रुपये निर्धारित किया गया था, जबकि एमएसपी और इनपुट सब्सिडी सहित क्षेत्र पर वास्तविक प्रभावी व्यय 3.91 लाख करोड़ से अधिक रहा। अनुमान है कि इस क्षेत्र के लिए आवंटन में उत्तर की ओर बढ़त हो सकती है। अधिक आवंटन उभरते क्षेत्रों को प्रोत्साहन देगा और निर्यात लक्ष्यों, आत्मनिर्भरता, अनुसंधान एवं विकास तथा तकनीक-आधारित खेती को समर्थन प्रदान करेगा। यह बजट ऐसे समय में आ रहा है जब कृषि क्षेत्र सुस्ती के दौर से गुजर रहा है।

परिवहन में सड़ते अरबों रुपये

मजबूत अनाज उत्पादन के बावजूद भारत में भंडारण और लॉजिस्टिक्स की कमी के कारण फल और सब्जियों जैसी वस्तुओं का 15% से 20% तक नुकसान हो जाता है। पीडीएस भी रिसाव, अवसंरचना की कमी और बर्बादी जैसी चुनौतियों से जूझ रहा है। यह कृषि उत्पादकता के लिए बड़ी बाधाएं हैं। आगामी बजट में फसल कटाई के बाद प्रबंधन हेतु कोल्ड चेन, आधुनिक गोदाम, प्रसंस्करण इकाइयां और डिजिटल आपूर्ति-श्रृंखला प्रबंधन जैसी कृषि अवसंरचना में निवेश तेज किया जाना चाहिए। मूल्य स्थिरीकरण कोष (पीएसएफ) का विस्तार होना चाहिए। इसका उपयोग पहले से प्याज और दाल की कीमतों को स्थिर करने के लिए किया जा रहा है। अन्य सस्ती आवश्यक वस्तुओं जैसे दाल, आटा और चावल की उपलब्धता नेटवर्क को मजबूत करना, निम्न-आय वर्ग के लिए वहनीयता बनाए रखने में मदद करेगा।

खाद्य सुरक्षा के लिए कदम

सरकार के राष्ट्रीय खाद्य तेल–तिलहन मिशन और आत्मनिर्भर दाल मिशन, आत्मनिर्भरता की स्पष्ट दिशा दर्शाते हैं। इसमें तिलहन के लिए 2030–31 तक 10,103 करोड़ रुपये का प्रावधान है। उत्पादन को 39 मिलियन टन से बढ़ाकर लगभग 70 मिलियन टन करने का लक्ष्य रखा गया है। इसमें 40 लाख हेक्टेयर धान-परती भूमि को तिलहन के तहत लाने की योजना शामिल है। इसी प्रकार 1,000 करोड़ के समर्थन वाले दाल मिशन का लक्ष्य 2027 तक चयनित दालों में आत्मनिर्भरता हासिल करना है, जिसके तहत 126 लाख क्विंटल प्रमाणित बीजों का वितरण और 88 लाख मुफ्त बीज किट उपलब्ध कराई जाएंगी। बजट में इन प्रयासों को और मजबूत करना चाहिए, खासकर इसलिए क्योंकि भारत अभी भी अपनी खाद्य तेल आवश्यकता का लगभग 60% आयात करता है और दालों का भी बड़ा हिस्सा बाहर से लाता है। खाद्य और पोषण सुरक्षा की शुरुआत खेतों से होती है। भारतीय कृषि में पैमाना भी है और स्थायित्व भी। बजट 2026 यह तय करेगा कि सरकार पुरानी लकीरों पर ही हल चलाती रहेगी या इस क्षेत्र को वैश्विक स्तर पर बड़ी फसल काटने में मदद करेगी।

खाद्य सुरक्षा
सेंट्रल डेस्क

कीटनाशक देश को खाद्य सुरक्षा देने में भी अहम फसल सुरक्षा के लिए स्पष्ट नियमों की दरकार

सही संतुलन की जरूरत

प्रस्तावित कीटनाशक प्रबंधन विधेयक, 2025 का उद्देश्य भारत की नियामकीय रूपरेखा को आज की वास्तविकताओं के अनुरूप बनाना है। निगरानी को मजबूत करने, अनुपालन में सुधार लाने और किसानों व उपभोक्ताओं की सुरक्षा सुनिश्चित करने का इरादा समयानुकूल और आवश्यक है। हालांकि, सभी बुनियादी सुधारों की तरह इसका वास्तविक प्रभाव इस बात पर निर्भर करेगा कि इन उद्देश्यों को व्यवहार में कितनी प्रभावी ढंग से लागू किया जाता है। इस दृष्टि से प्रस्तावित कीटनाशक प्रबंधन विधेयक को ऐसे बजट का पूरक समर्थन मिल सकता है, जो नियामकीय क्षमता, आधुनिक परीक्षण अवसंरचना और कुशल मूल्यांकन समयसीमा को सुदृढ़ करे। ये कदम यह सुनिश्चित कर सकते हैं कि नई रूपरेखा सुरक्षित कृषि की ओर पुल का काम करे। इसलिए बजट से फसल सुरक्षा क्षेत्र एक मूलभूत आर्थिक वास्तविकता की स्पष्ट स्वीकृति चाहता है। असल में उपज की रक्षा करना उतना ही महत्वपूर्ण है जितना उसका उत्पादन करना।

इसलिए फसल सुरक्षा उत्पाद उत्पादकता बनाए रखने में अनिवार्य भूमिका निभाते हैं। उन्हें आवश्यक कृषि इनपुट के रूप में मान्यता देना कृषि लचीलापन और राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा में उनके योगदान को बेहतर ढंग से प्रतिबिंबित करेगा।

किसान-केंद्रित सुधार होगा जीएसटी को तर्कसंगत बनाना

बजट की सबसे तात्कालिक अपेक्षाओं में से एक है फसल सुरक्षा उत्पादों पर जीएसटी को अधिकतम 5% तक तर्कसंगत बनाना, ताकि उन्हें अन्य उर्वरकों (बायोस्टिमुलेंट/जैविक उत्पादों) के समान स्तर पर लाया जा सके। ऐसा कदम किसानों पर लागत के दबाव को कम करेगा और उच्च गुणवत्ता वाले वैध उत्पादों की उपलब्धता बढ़ाकर जिम्मेदार उपयोग को प्रोत्साहित करेगा। इस दृष्टि से यह रियायत से अधिक एक किसान-केंद्रित सुधार है, जो कृषि मूल्य श्रृंखला में उत्पादकता, सुरक्षा और अनुपालन को मजबूत करता है।

विनिर्माण का अवसर

नए फसल सुरक्षा अणुओं के निर्माण के लिए लक्षित प्रोडक्शन लिंक्ड इंसेंटिव (पीएलआई) ढांचा वैश्विक स्तर के निवेश आकर्षित करने, घरेलू विनिर्माण क्षमताओं को गहरा करने और भारत को अंतरराष्ट्रीय आपूर्ति श्रृंखलाओं में अधिक मजबूती से एकीकृत करने में मदद कर सकता है। यह केवल आयात प्रतिस्थापन का मामला नहीं, बल्कि वैश्विक बाजारों के लिए भारत को एक विश्वसनीय और प्रतिस्पर्धी उत्पादक के रूप में स्थापित करने का अवसर है।

नवाचार को वित्तीय समर्थन

फसल सुरक्षा नवाचार विज्ञान-प्रधान, पूंजी-आधारित और स्वाभाविक रूप से दीर्घकालिक प्रक्रिया है। एक नए अणु के विकास में एक दशक से अधिक समय लग सकता है, जिसके लिए सतत निवेश और नियामकीय निश्चितता आवश्यक है। यद्यपि भारत ने विभिन्न क्षेत्रों में नवाचार को मान्यता देने में प्रगति की है, फिर भी कृषि अनुसंधान एवं विकास के लिए वित्तीय समर्थन को और मजबूत करने की गुंजाइश है। भारत फसल सुरक्षा को किसान लचीलापन, निर्यात वृद्धि और खाद्य सुरक्षा के लिए एक रणनीतिक साधन के रूप में सुदृढ़ कर सकता है, यह सुनिश्चित करते हुए कि वित्तीय और नियामकीय ढाँचे राष्ट्रीय महत्वाकांक्षा के अनुरूप आगे बढ़ें। लिया गया निर्णय न केवल उद्योग के परिणामों को प्रभावित करेगा, बल्कि भारत की कृषि अर्थव्यवस्था की दीर्घकालिक स्थिरता और प्रतिस्पर्धात्मकता को भी आकार देगा।

बजट से कंपनियों को बड़ी उम्मीद, अर्थव्यवस्था को रफ्तार देने का खाका तैयार

बजट में इन सेक्टर्स पर फोकस बढ़ेगा तो बदलेगी ग्रोथ की तस्वीर

इंफ्रास्ट्रक्चर, मैन्युफैक्चरिंग, ग्रीन एनर्जी और एमएसएमई पर भी ध्यान दे केंद्र सरकार

इन्फ्रा
सेंट्रल डेस्क

केंद्रीय वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण एक फरवरी को आम बजट पेश करेंगी। इस बजट से भारतीय कंपनियों को कई बड़ी उम्मीदें हैं। उद्योगों से जुड़े विशेषज्ञों का कहना है कि केंद्र सरकार को इस बार बजट में इंफ्रास्ट्रक्चर को मजबूत करने, मैन्युफैक्चरिंग में वैल्यू एडिशन बढ़ाने, ग्रीन एनर्जी को बढ़ावा देने और एमएसएमई सेक्टर को सस्ता और आसान कर्ज दिलाने पर खास फोकस करना चाहिए, ताकि लॉजिस्टिक कॉस्ट घटे और बिजनेस की रफ्तार बनी रहे। इंडस्ट्री के एक्सपर्ट्स का कहना है कि मौजूदा वैश्विक हालात में ग्रोथ बनाए रखने के लिए शॉर्ट टर्म राहत से ज्यादा जरूरी है कि अर्थव्यवस्था की बुनियाद को मजबूत किया जाए। कंपनियों का भरोसा बढ़ेगा व लंबे समय में देश की प्रतिस्पर्धा क्षमता भी बेहतर होगी।

ग्लोबल तनाव बढ़ा रहे चुनौतियां

अमेरिका के बढ़ते टैरिफ, लगातार चल रहे जियो-पॉलिटिक्स तनाव और सप्लाई चेन में बदलावों की वजह से कंपनियों के लिए अब लागत को काबू में रखना, नीति की स्थिरता और प्रोजेक्ट्स को समय पर पूरा करना बहुत अहम हो गया है। यही वजह है कि निवेश और व्यापार से जुड़े फैसले पहले से ज्यादा सोच-समझकर लिए जा रहे हैं।

भारत की स्थिति बेहतर

दुनिया भर में कंपनियों को कई मुश्किलों का सामना करना पड़ रहा है, लेकिन भारत की घरेलू अर्थव्यवस्था पहले की तुलना में मजबूत स्थिति में है। इसकी वजह सरकार का पब्लिक इन्वेस्टमेंट पर लगातार फोकस, टैक्स सुधार और कंपनियों की बेहतर बैलेंस शीट है। अब चुनौती यह है कि इस मजबूती को लंबे समय तक टिकाऊ ग्रोथ में बदला जाए और मैन्युफैक्चरिंग व एक्सपोर्ट को और मजबूत किया जाए।

कम हुई लॉजिस्टिक कॉस्ट

पिछले एक दशक में सरकार ने सड़क, रेलवे और इंफ्रास्ट्रक्चर में लगातार निवेश बढ़ाया है, जिससे कनेक्टिविटी बेहतर हुई है। वित्तवर्ष 18 से वित्तवर्ष 26 के बीच इंफ्रास्ट्रक्चर पर बजट सपोर्ट करीब 12% सीएजीआर से बढ़ा है। इसका असर यह हुआ है कि देश की लॉजिस्टिक कॉस्ट घटकर अब करीब 7.97% रह गई है। चूंकि रेलवे सामान ढोने का सबसे सस्ता जरिया है, इसलिए बजट में रेलवे की क्षमता बढ़ाने और प्राइवेट सेक्टर के लिए कार्गो सुविधा बढ़ाने पर जोर जारी रहना चाहिए। इसके साथ ही सड़कों पर कैपेक्स बनाए रखते हुए बीओटी मॉडल के जरिए निजी निवेश को भी बढ़ावा देना जरूरी है।

मैन्युफैक्चरिंग को मजबूत करने की जरूरत

भारत में मैन्युफैक्चरिंग का योगदान जीडीपी में अभी करीब 17% है, जबकि सरकार का लक्ष्य इसे 25% तक ले जाना है। पीएलआई स्कीम (1.9 लाख करोड़, 14 सेक्टर) से कुछ फायदा जरूर हुआ है, लेकिन अब भी लोकल मैन्युफैक्चरिंग, लागत और एग्जिक्यूशन से जुड़ी कई चुनौतियां बनी हुई हैं। इसलिए बजट में रिसर्च एंड डेवलपमेंट, टेक्निकल स्किल और इनोवेशन पर टैक्स छूट या इंसेंटिव देने की जरूरत है, खासतौर पर इलेक्ट्रॉनिक्स, ईवी, डेटा सेंटर, एनर्जी स्टोरेज और सोलर जैसे सेक्टरों में।

ग्रीन एनर्जी पर भरोसेमंद पॉलिसी जरूरी

भारत ने 2030 तक जीडीपी की एमिशन इंटेंसिटी 45% घटाने, 500 जीडब्ल्यू नॉन-फॉसिल पावर कैपेसिटी हासिल करने और 2070 तक नेट-जीरो बनने का लक्ष्य रखा है। अब कंपनियों को जरूरत है स्पष्ट पॉलिसी और लॉन्ग टर्म फंडिंग की, ताकि वे भरोसे के साथ ग्रीन प्रोजेक्ट्स में निवेश कर सकें। बजट से उम्मीद है कि ग्रीन इन्वेस्टमेंट के लिए बेहतर फाइनेंसिंग सिस्टम बने, क्लीन एनर्जी क्लस्टर विकसित हों और प्रोजेक्ट्स को तेजी से लागू किया जा सके।

एमएसएमई को सस्ता और आसान लोन मिलना जरूरी

एमएसएमई सेक्टर देश के जीडीपी का करीब 30% और एक्सपोर्ट का 45% योगदान देता है, लेकिन इन्हें अब भी महंगा कर्ज और पेमेंट डिले जैसी समस्याओं का सामना करना पड़ता है। बजट में ऐसे कदम जरूरी हैं, जिससे एमएसएमई को तेजी से और कम ब्याज पर लोन मिल सके। इसके साथ ही मुद्रा योजना के तहत लोन की सीमा बढ़ाने की जरूरत है, क्योंकि प्रोजेक्ट्स की लागत अब पहले से कहीं ज्यादा हो चुकी है।

इन क्षेत्रों को भी चाहिए बूस्ट

फार्मा और मेडटेक को लेकर बड़ी उम्मीद

बजट 2026 में सरकार को फार्मा और मेडिकल डिवाइस सेक्टर में आत्मनिर्भरता पर जोर देना चाहिए। उनका सुझाव है कि मेडिकल डिवाइस सेक्टर के लिए 10,000 करोड़ रुपये का पीएलआई पैकेज दिया जाना चाहिए, जिससे ऑन्कोलॉजी, इमेजिंग और इम्प्लांट जैसे सेगमेंट में घरेलू मैन्युफैक्चरिंग बढ़े। जीवन कसारा के मुताबिक, अगर यह पीएलआई सपोर्ट मिलता है, तो भारत की मेडिकल डिवाइसेज में 70% तक की आयात निर्भरता घट सकती है और 2030 तक देश में 1.2 लाख करोड़ रुपये का घरेलू उत्पादन खड़ा किया जा सकता है।

इंश्योरेंस सेक्टर्स को भी चाहिए बड़ी राहत

बीमा
सेंट्रल डेस्क

इंश्योरेंस सेक्टर को बजट 2026 से काफी उम्मीदें हैं। बढ़ती मेडिकल लागत, कम इंश्योरेंस कवरेज और महंगे प्रीमियम को देखते हुए इस सेक्टर को बजट से बड़ी राहत मिलने की उम्मीद भी की जा रही है। इंश्योरेंस सेक्टर को बजट से कई उम्मीदें होती हैं, खासकर टैक्स छूट और पॉलिसीधारकों के लिए सुविधाओं में वृद्धि की ऐसे में आइए जानते हैं इस बजट में इंश्योरेंस सेक्टर के लिए क्या कुछ खास पेश हो सकता है। एक फरवरी को वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण केंद्रीय बजट 2026 पेश करने वाली है। ऐसे में अब देखना यह है कि बजट 2026 में वित्त मंत्री क्या क्या ऐलान करती हैं और इन ऐलानों से आम लोगों और अलग अलग सेक्टर्स को क्या क्या लाभ मिलता है। बात करें इंश्योरेंस सेक्टर की तो इंश्योरेंस सेक्टर को बजट 2026 से काफी उम्मीदें हैं। बढ़ती मेडिकल लागत, कम इंश्योरेंस कवरेज और महंगे प्रीमियम को देखते हुए इस सेक्टर को बजट से बड़ी राहत मिलने की उम्मीद भी की जा रही है।

- वित्त मंत्री एक फरवरी को कर सकती हैं बड़े ऐलान

सेक्शन 80डी की टैक्स सीमा

इलाज और मेडिकल खर्च लगातार तेजी से बढ़ रहे हैं। बावजूद इसके इनकम टैक्स एक्ट की धारा 80डी के तहत हेल्थ इंश्योरेंस प्रीमियम पर मिलने वाली 25,000 रुपये की टैक्स कटौती सीमा कई सालों से बिना बदलाव के बनी हुई है। ऐसे में इस समय में यह सीमा आम लोगों को पर्याप्त राहत नहीं देती है। ऐसे में अब उम्मीद है कि सरकार इस बजट में इस सीमा को 25,000 रुपये से बढ़ाकर 50,000 रुपये कर सकती है।

टर्म इंश्योरेंस पर फोकस

भारत में आज भी बड़ी संख्या में लोगों के पास पर्याप्त लाइफ इंश्योरेंस सुरक्षा कवर नहीं है। रिपोर्ट्स के अनुसार, देश में करीब 17 ट्रिलियन डॉलर का मॉर्टलिटी प्रोटेक्शन गैप मौजूद है यानी लोगों को जितनी जीवन बीमा सुरक्षा की जरूरत है, उसके मुकाबले लगभग 83 प्रतिशत जरूरतें अब भी पूरी नहीं हो पाई हैं। ऐसे में सरकार को टर्म इंश्योरेंस को प्रोत्साहन देना चाहिए। इसके लिए हेल्थ इंश्योरेंस पर टैक्स छूट, टर्म इंश्योरेंस प्रीमियम पर अलग टैक्स छूट मिलनी चाहिए।

जीएसटी और इंश्योरेंस प्रीमियम

इंश्योरेंस सेक्टर लंबे समय से जीएसटी से जुड़ी राहत की मांग कर रहा है. बीमा कंपनियां केवल जीएसटी से छूट नहीं, बल्कि पूरे सेक्टर को जीरो-रेटेड दर्जा दिए जाने की मांग कर रही हैं। अगर इंश्योरेंस को जीरो-रेटेड किया जाता है, तो कंपनियां अपने रोजमर्रा के खर्चों पर चुकाए गए टैक्स का इनपुट टैक्स क्रेडिट ले सकेंगी। इससे यह अतिरिक्त टैक्स बोझ प्रीमियम में नहीं जोड़ा जाएगा और ग्राहकों को कम प्रीमियम देना पड़ेगा।

यह भी चाहिए

- **टैक्स छूट:** इंश्योरेंस पॉलिसियों पर टैक्स छूट की सीमा बढ़ाने की मांग।
- **पॉलिसीधारकों के लिए सुविधाएं :** पॉलिसीधारकों के लिए क्लेम सेटलमेंट प्रक्रिया को सरल बनाने और अधिक सुविधाएं प्रदान करने की उम्मीद।
- **इंश्योरेंस पेनेट्रेशन बढ़ाना :** इंश्योरेंस सेवाओं को अधिक लोगों तक पहुंचाने के लिए सरकार से समर्थन की उम्मीद।
- **नियमों में बदलाव :** इंश्योरेंस सेक्टर को अधिक लेबल प्लेयरों को आकर्षित करने और विकास को बढ़ावा देने के लिए नियमों में बदलाव की उम्मीद।

यह भी जानिये

किस वित्त मंत्री ने पेश किए कितने बजट

भारत में हर साल 1 फरवरी के केंद्रीय बजट पेश किया जाता है। यह बजट भारत के वित्त मंत्री द्वारा पेश किया जाता है। हर साल की तरह इस साल भी केंद्रीय बजट 2026 आने वाली 1 फरवरी को भारत, की वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण द्वारा पेश किया जाएगा। 1947 में आजादी के बाद से अब तक भारत के कई वित्त मंत्रियों ने संसद में बजट पेश किए हैं। कुछ वित्त मंत्री थोड़े समय के लिए रहे और कम बजट पेश किए। वहीं, कुछ वित्त मंत्री लंबे समय के लिए रहें और उन्होनें कई बजट पेश किए। आज हम आपको इसी के बारे में बताने वाले हैं। हम आपको बताएंगे कि 1947 में आजादी के बाद से भारत के किन वित्त मंत्रियों ने कितने बजट पेश किए। आइए जानते हैं पूरी जानकारी।

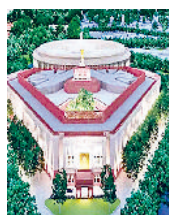

आजादी के बाद पहला बजट

- आर. के. शनमुखम चेट्टी आजादी के बाद भारत के पहले वित्त मंत्री थे. उन्होने 26 नवंबर 1947 में स्वतंत्र भारत का पहला बजट पेश किया था। आर. के. शनमुखम चेट्टी एक वकील और इकोनॉमिस्ट भी थे।
- भारत के सबसे ज्यादा बजट पूर्व प्रधानमंत्री मोरारजी देसाई ने पेश किए हैं. उन्होंने कुल 10 बजट पेश किए हैं। हालांकि, यह 10 बजट उन्होंने लगातार पेश नहीं किए। उन्होंने पहले 1959 से 1964 के बीच 6 बजट पेश किए और 1967 से 1969 के बीच 4 बजट पेश किए।
- पी चिदंबरम भारत के पूर्व वित्त मंत्री रहे हैं। उन्होंने अपने कार्यकाल के दौरान कुल 9 बजट पेश किए। उन्होंने अपना पहला बजट 1996 में पेश किया था. वहीं साल 2004 से 2008 के बीच उन्होंने 5 बजट पेश किए. बाद में वह साल 2009 में एक बार फिर वित्त मंत्री बनें और उन्होंने साल 2013 से 2014 के बीच बजट पेश किए।
- पूर्व राष्ट्रपति प्रणब मुखर्जी ने भी भारत में बजट पेश किए हैं। उन्होंने पहले वित्त मंत्री के रूप में भी कार्यकाल संभाला था। इस दौरान उन्होंने कुल 8 बजट पेश किए थे। उन्होंने पहले 3 बजट साल 1982 से 1984 के बीच पेश किए। वहीं साल 2009 से 2011 के बीच उन्होंने 5 बजट पेश किए।
- निर्मला सीतारमण भारत की वर्तमान वित्त मंत्री है और वह साल 2019 से इस पद पर है। अब तक वहां 8 बजट पेश कर चुकी हैं और आने वाली 1 फरवरी को वह 9वां बजट पेश करने वाली हैं।

18 से 33 वर्ष आयु वर्ग कर सकेगा आवेदन

रेलवे में 21997 पदों पर बंपर भर्ती, आवेदन प्रक्रिया शुरू, 10वीं पास युवाओं के लिए सुनहरा मौका

हरिभूमि न्यूज ▶▶ नारनौल

इस भर्ती अभियान के तहत भारतीय रेलवे के विभिन्न जोन और यूनिट्स में 21997 पद भरे जाएंगे। ये सभी पद लेवल-वन के अंतर्गत आते है। पदों का जोन-वार और श्रेणी-वार विवरण एनेक्सचर-बी में दिया गया है।

बेरोजगार युवाओं के लिए भारतीय रेलवे ने एक बार फिर बड़ी खुशखबरी दी है। रेलवे भर्ती बोर्ड ने केंद्रीकृत रोजगार अधिसूचना संख्या 09/2025 जारी करते हुए लेवल- वन के विभिन्न पदों पर 21997 भर्तियों का ऐलान किया है। यह भर्ती सातवें वेतन आयोग के अंतर्गत की जाएगी। जिसमें चयनित उम्मीदवारों को 18000 रूपये प्रारंभिक वेतन मिलेगा। रेलवे की यह भर्ती खासतौर पर उन युवाओं के लिए बेहद अहम मानी जा रही है जो लंबे समय से सरकारी नौकरी की तैयारी कर रहे है। आवेदन प्रक्रिया 31 जनवरी से शुरू हो चुकी है और दो मार्च 2026 रात 11:59 बजे तक ऑनलाइन आवेदन किया जा सकता है।

फर्जी वेबसाइटों से रहें सावधान

रेलवे भर्ती बोर्ड ने अभ्यर्थियों को सख्त चेतावनी दी है कि वे केवल आधिकारिक वेबसाइट के माध्यम से ही आवेदन करें। किसी भी दलाल, एजेंट या फर्जी वेबसाइट के झांसे में न आएं। कंप्यूटर आधारित परीक्षा की तिथि, एडमिट कार्ड और रिजल्ट से जुड़ी सभी जानकारियां केवल आधिकारिक वेबसाइट पर ही जारी की जाएंगी।

शैक्षणिक योग्यता

इन पदों के लिए उम्मीदवार का दसवीं पास होना अनिवार्य है या संबंधित पद के अनुसार आइटीआई / कोर्स कंप्लीटेड एक्ट अप्रेंटिस योग्यता होनी चाहिए। ध्यान देने योग्य बात यह है कि जिन उम्मीदवारों का फाइनल रिजल्ट अभी घोषित नहीं हुआ है वे आवेदन के पात्र नहीं है। योग्यता 2 मार्च 2026 तक पूरी होनी चाहिए।

महत्वपूर्ण तिथियां

रेलवे भर्ती बोर्ड द्वारा जारी अधिसूचना के अनुसार आवेदन से जुड़ी प्रमुख तिथियां इस प्रकार है :

- ऑनलाइन आवेदन शुरू	: 31 जनवरी
- आवेदन की अंतिम तिथि	: 2 मार्च
- फीस जमा करने की अंतिम तिथि	: 4 मार्च
- आवेदन में संशोधन की तिथि	: 5 मार्च से 14 मार्च 2026
- क्राइब विवरण भरने की अवधि	: 15 मार्च से 19 मार्च 2026

आयु सीमा और छूट

उम्मीदवार की आयु 1 जनवरी 2026 को आधार मानकर :

- न्यूनतम आयु : 18 वर्ष
- अधिकतम आयु : 33 वर्ष

आरक्षित वर्गों को नियमानुसार आयु में छूट दी जाएगी :

- ओबीसी एनसीएल : 3 वर्ष
- एससी/एसटी : 5 वर्ष
- दिव्यांग : अधिकतम 15 वर्ष तक
- पूर्व सैनिक: सेवा अवधि के अनुसार छूट

महिला उम्मीदवार जो विधवा, तलाकशुदा या न्यायिक रूप से पृथक है, उन्हें भी विशेष आयु छूट का प्रावधान दिया गया है।

मेडिकल स्टैंडर्ड भी जरूरी

- रेलवे ने साफ किया है कि चयन के लिए उम्मीदवार का मेडिकल फिट होना
- अनिवार्य है। अलग-अलग पदों के लिए मेडिकल स्टैंडर्ड तय किए गए है।
- जो उम्मीदवार मेडिकल जांच में असफल होंगे। उन्हें कोई वैकल्पिक नियुक्ति नहीं दी जाएगी।

आवेदन शुल्क

रेलवे भर्ती बोर्ड ने आवेदन शुल्क को भी स्पष्ट किया है- सामान्य / ओबीसी /ईडब्लूएस के लिये 500 रुपये, एससी /एसटी / महिला / दिव्यांग / पूर्व सैनिक / अल्पसंख्यक / ईबीसी के लिये 250 रुपये तय किया गया है। खास बात यह है कि सीबीटी परीक्षा में शामिल होने वाले उम्मीदवारों को शुल्क वापस किया जाएगा। हालांकि बैंक चार्ज काटा जाएगा।

चयन प्रक्रिया कैसी होगी

रेलवे भर्ती प्रक्रिया पूरी तरह पारदर्शी होगी और इसमें निम्न चरण शामिल है :

1. कंप्यूटर आधारित परीक्षा
2. शारीरिक दक्षता परीक्षा
3. दस्तावेज सत्यापन
4. चिकित्सा परीक्षण

सीबीटी में नेगेटिव मार्किंग होगी। प्रत्येक गलत उत्तर पर 1/3 अंक काटे जाएंगे।

खबर संक्षेप

गांव पाली में महिलाओं की टोली गठित

महेंद्रगढ़। सभी हिंदू धर्म ग्रंथ में जो वर्णन मिलता है, उसमें महिलाओं का योगदान पुरुषों के योगदान के सदैव समानांतर रहा है। कोई भी यज्ञ हवन धार्मिक सम्मेलन महिलाओं की सहभागिता के बिना पूर्ण नहीं हो सकता। किसी भी अच्छे कार्य की परिणिति में दोनों का सामान योगदान होना चाहिए। संघ के शताब्दी वर्ष में होने वाले हिंदू सम्मेलन में पुरुषों के साथ महिलाओं की सहभागिता अधिक से अधिक हो। इसके लिए शनिवार को गांव पाली में महिलाओं की टोली का गठन किया गया।

राजकीय महाविद्यालय में एनएसएस शिविर संपन्न

महेंद्रगढ़। राजकीय महाविद्यालय में आयोजित राष्ट्रीय सेवा योजना (एनएसएस) शिविर के तृतीय दिवस विद्यार्थियों द्वारा उत्साहपूर्वक विभिन्न गतिविधियों में भाग लिया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ महाविद्यालय प्राचार्य प्रोफेसर विजय यादव द्वारा दीप प्रज्वलन कर किया गया। कार्यक्रम के प्रथम सत्र में डॉ. अश्वनी कुमार द्वारा प्लास्टिक प्रदूषण विषय पर व्याख्यान दिया गया। उन्होंने विद्यार्थियों को बताया कि पॉलिथीन का अत्यधिक प्रयोग मानव स्वास्थ्य के लिए अत्यंत हानिकारक है।

हरियाणा की संस्कृति से गूंज उठा गोवा

महेंद्रगढ़। जिले के सात युवाओं ने माय भारत युवा कार्यक्रम एवं खेल मंत्रालय भारत सरकार द्वारा आयोजित हरियाणा–गोवा राज्य युवा आदान-प्रदान कार्यक्रम में 24 से 28 जनवरी तक सक्रिय सहभागिता निभाई। जिला युवा अधिकारी नित्यानंद यादव ने बताया कि प्राप्त आवेदनों की छंटनी के उपरांत प्रतिभाशाली युवाओं का चयन किया गया। उनके कुशल मार्गदर्शन और नेतृत्व में युवाओं ने हरियाणा की संस्कृति को राष्ट्रीय मंच पर प्रभावी ढंग से प्रस्तुत किया। चयनित युवाओं में हरिश, अमित, विवेक, राहुल, अशोक, स्नेह एवं काजल शामिल रहे।

राता कलां के प्राचार्य नारायण सिंह सेवानिवृत्त

मंडी अटेली। राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय राता कलां के अत्यंत प्रतिष्ठित और कर्मठ नारायण सिंह भड़ाना प्राचार्य 31 जनवरी को शिक्षा विभाग में 29 वर्षों की समर्पित सेवा के पश्चात सेवानिवृत्त हो गए हैं। इस अवसर पर विद्यालय परिसर में एक भावपूर्ण विदाई समारोह का आयोजन किया गया, जिसमें विद्यालय प्रशासन, समस्त शिक्षक गण,गांव के ग्रामीणों और छात्र-छात्राओं ने उन्हें विदाई दी। कार्यक्रम की शुरुआत मां सरस्वती के माल्यार्पण से हुई।

पूर्व मंडल अध्यक्ष के ताऊ का निधन

महेंद्रगढ़। नांगल सिरोही निवासी एवं भाजपा के पूर्व मंडल अध्यक्ष दिनेश यादव के ताऊ एवं पूर्व बार प्रधान एडवोकेट राजीव के चाचा होशियार सिंह का शुक्रवार को 74 वर्ष की आयु में निधन हो गया। उनके निधन से क्षेत्र में शोक की लहर दौड़ गई। उनका अंतिम संस्कार शुक्रवार को ही उनके पैतृक गांव नांगल सिरोही में किया गया।

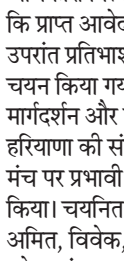

मजदूरों ने चार लेबर कोड लागू करने के विरोध में किया प्रदर्शन

नए जी राम जी कानून में श्रमिकों के काम की गारंटी समाप्त

हरिभूमि न्यूज ▶▶ नारनौल

भवन निर्माण कारीगर मजदूर यूनियन सम्बंधित एआईयूटीयूसी ने यूनियन के नसीबपुर कार्यालय में जिला प्रधान सीताराम एवं गांव गोद में जिला सचिव महावीर प्रसाद की अध्यक्षता में भवन निर्माण कारीगर मजदूरों ने चार लेबर कोड लागू करने के विरोध में प्रदर्शन किया। मजदूर नेताओं ने कहा कि नए कानून में मनरेगा के तहत देहात में काम मांगने का अधिकार नहीं रहा है। जरूरत तो थी मनरेगा कानून में साल में 200 दिन काम व 800 रुपये की दिहाड़ी की गारंटी करने की। मगर नए जी राम जी कानून में श्रमिकों के काम की गारंटी समाप्त कर दी है और साल में 60 दिन (फसल कटाई पर) काम नहीं मिलने पर मोहर लगा दी है। यह नया कानून वास्तव में मजदूरों से काम मांगने का अधिकार छीनना व उनके काम के एवज में दिहाड़ी देने से बचने का रास्ता केंद्र सरकार ने ले लिया है। एआईयूटीयूसी का मानना है कि निर्माण मजदूरों व देहात के खेत मजदूरों, मनरेगा मजदूरों को अपने जीवन से जुड़ी समस्याओं के खिलाफ जोरदार संगठित आंदोलन खड़ा करना होगा।

नारनौल। नए कानून के विरोध में प्रदर्शन करते मजदूर। फोटो : हरिभूमि

12 फरवरी को करेंगे हड़ताल

प्रधान सीताराम ने जिले के सभी मजदूरों से केन्द्रीय ट्रेड यूनियन एआईयूटीयूसी सहित देश की 10 बड़ी ट्रेड यूनियनों के बुलावे पर 12 फरवरी को होने वाली राष्ट्रव्यापी हड़ताल में भाग लेने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि राष्ट्रव्यापी हड़ताल के माध्यम से चार लेबर कोड को वापस लेने का सरकार पर दबाव बनाया जाएगा। उन्होंने बताया कि 29 श्रम संहिताओं को बहाल कर उन्हें संशोधित कर मजदूर हितों में समृद्ध करने, भवन निर्माण कारीगर मजदूरों के पंजीकरण व हित लाभ की प्रक्रिया को सरल करने, भवन निर्माण मजदूरों के बन्द पड़े पोर्टल को तुरंत खोलने, नए पंजीकरण शुरू करने व हित लाभ देने व 90 दिन की वर्क स्लिप तस्दीक की पावर यूनियन को दिए जाने की पुरजोर मांग की जाएगी। जिला सचिव महावीर प्रसाद गोद ने कहा कि पिछले कई महीनों से एचबीओसीडब्ल्यू की साइट सरकार ने बंद कर रखी है। मगर निर्माण मजदूरों का कोई काम नहीं किया जा रहा। हित लाभ के नए फार्म जमा नहीं किए जा रहे। नए श्रमिकों का पंजीकरण बंद है। सदस्यता रिन्यूअल नहीं हो रहा। भवन निर्माण कारीगर मजदूर यूनियन हरियाणा अनेक बार अपने मांग पत्रों/ज्ञापनों में श्रमिकों के कल्याण की मांग उठाते-उठाते परेशान हो चुका है, लेकिन सनवाई नहीं हो रही। उन्होंने बताया कि एचबीओसीडब्ल्यू में भ्रष्टाचार पर रोक लगाने की मांग भी अनेक बार उठा चुके हैं। सरकार ने एचबीओसीडब्ल्यू की साइट बंद करके हजारों वास्तविक श्रमिकों को नए पंजीकरण व रिन्यूअल से वंचित कर दिया है। पंजीकृत श्रमिकों के हित लाभ देने को रोकना सरकार का घोर मजदूर विरोधी कदम है।

यह रहे मौजूद

जिला प्रधान सीताराम व जिला सचिव महावीर प्रसाद गोद ने आगामी 12 फरवरी को राष्ट्रव्यापी हड़ताल में बढ़-चढ़कर शामिल होकर मेहनतकश जनता के साथ अपने भाईचारे को मजबूत करते हुए राष्ट्रव्यापी हड़ताल में भाग लेने का आह्वान किया। इस अवसर पर मोहर सिंह, रमेश कुमार, सतबीर, अमरजीत, मनोज, पवन कुमार, विजय सिंह, दिनेश, सुरेन्द्र, सरोज, किरन, केशव, सविता, सरोज, सीमा सहित अनेक मजदूर उपस्थित रहे।

प्लेसमेंट सेल का मेक इन इंडिया पर हुआ व्याख्यान

महेंद्रगढ़। युवाओं को संबोधित करते हुए। फोटो : हरिभूमि

- मेक इन इंडिया अभियान के माध्यम से स्थानीय एवं स्वदेशी उद्योगों को मिल रहा प्रोत्साहन

हरिभूमि न्यूज ▶▶ महेंद्रगढ़

राजकीय महाविद्यालय में प्लेसमेंट सेल के तत्वावधान में मेक इन इंडिया विषय पर एक विस्तृत व्याख्यान आयोजित किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ महाविद्यालय प्राचार्य प्रोफेसर विजय यादव एवं प्लेसमेंट सेल प्रभारी डॉ. रेनू यादव द्वारा किया गया। राजकीय महाविद्यालय कंवाली रेवाड़ी के डॉ. तीर्थराज ने अपने व्याख्यान में मेक इन इंडिया पहल के उद्देश्यों, उसकी आवश्यकता तथा देश के आर्थिक विकास में उसकी महत्वपूर्ण भूमिका पर विस्तारपूर्वक प्रकाश डाला। उन्होंने बताया कि मेक इन इंडिया अभियान के माध्यम से स्थानीय एवं स्वदेशी उद्योगों को प्रोत्साहन मिल रहा है, जिससे न केवल देश में उत्पादन क्षमता में वृद्धि हुई है, बल्कि युवाओं के लिए रोजगार के नए-नए अवसर भी सृजित हो रहे हैं।

मील का पत्थर साबित हो रही योजना

इस प्रकार की योजना भारत को आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में मील का पत्थर साबित हो रही हैं। डॉ. तीर्थराज ने कहा कि इस लक्ष्य को तभी प्राप्त किया जा सकता है, जब देश के युवा वर्ग इसमें सक्रिय, सकारात्मक और रचनात्मक भूमिका निभाए। उन्होंने यह भी स्पष्ट किया कि विकसित भारत का सपना युवाओं की सहभागिता के बिना अधूरा है। मेक इन इंडिया पहल छोटे एवं मध्यम उद्योगों को मजबूती प्रदान कर रही है, जिससे आत्मनिर्भर भारत के निर्माण में उल्लेखनीय योगदान मिल रहा है। प्राचार्य प्रोफेसर विजय यादव ने कहा कि इस प्रकार के शैक्षणिक एवं करियर उन्मुख कार्यक्रम विद्यार्थियों को उनके भविष्य के लिए नई दिशाएं प्रदान करते हैं और उनके व्यक्तित्व विकास में सहायक सिद्ध होते हैं। प्लेसमेंट सेल की प्रभारी डॉ. रेनू यादव ने कहा कि प्लेसमेंट सेल का उद्देश्य विद्यार्थियों को रोजगारपरक जानकारी, करियर मार्गदर्शन एवं राष्ट्रीय योजनाओं से जोड़ना है।

मॉडर्न स्कूल में हुआ सम्मान समारोह

हरिभूमि न्यूज ▶▶ महेंद्रगढ़

मॉडर्न सीनियर सेकेंडरी स्कूल में शनिवार को सम्मान समारोह आयोजित किया गया। इस दौरान जनवरी माह में आयोजित विभिन्न शैक्षणिक, खेल एवं सांस्कृतिक प्रतियोगिता में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले मेधावी विद्यार्थियों को सम्मानित किया गया। सम्मान समारोह के मुख्यातिथि प्राइवेट स्कूल एसोसिएशन के प्रधान पवन सिंह रहे। कार्यक्रम का शुभारंभ विद्यालय प्रबंधन द्वारा मुख्य अतिथि के स्वागत एवं दीप प्रज्वलन के साथ किया गया।

प्रधान पवन सिंह ने कहा कि प्रतियोगिताएं बच्चों के सर्वांगीण विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। कार्यक्रम के दौरान विद्यालय के विद्यार्थियों द्वारा रंगारंग सांस्कृतिक प्रस्तुतियां भी दी गईं। नृत्य, गीत एवं लघु नाटिका ने उपस्थित दर्शकों का मन मोह लिया। चेयरमैन सतनसिंह व प्राचार्य प्रदीप कुमार तंवर ने आभार व्यक्त किया। इस मौके पर राजेंद शर्मा, रामनिवास चौहान, मुकेश पाथेड़ा, बिरेंद्र सिंह, मुकेश शर्मा, राकेश श्योपूरा, मानसिंह, भूपेंद्र सैनी, कृष्ण यादव, शीला शर्मा, रीना यादव, अनीशा यादव, काजल सैनी, ज्योति तंवर, राखी, सूमन, स्नेहा सहित विद्यालय का स्टाफ सदस्य उपस्थित था।

महेंद्रगढ़। अतिथि का स्वागत करते हुए। फोटो : हरिभूमि

सिहमा पशु चिकित्सालय के एनिमल अटेंडेंट सुबेसिंह सेवानिवृत्त

मंडी अटेली। सिहमा पशु चिकित्सालय में एनिमल अटेंडेंट दुबलाना निवासी सुबेसिंह सेवानिवृत्त हो गए हैं। उनके सम्मान में चिकित्सालय परिसर में एक विदाई समारोह आयोजित किया गया। सेवानिवृत्त हुए सुबेसिंह ने पशुपालन विभाग में 38 वर्षों की समर्पित और निष्ठा पूर्ण सेवा दी, जबकि सिहमा पशु चिकित्सालय में 28 वर्षों में अपना कार्यकाल पूरा किया। इस मौके पर डा. राजपाल ने बताया कि सुबेसिंह पूरी निष्ठा एवं कर्मठता से कार्य करते रहे। उनके सेवाकाल के दौरान विभागीय कर्तव्यों के साथ-साथ संपूर्ण निष्ठा व समर्पण के साथ समाज हित में कार्य किया।

श्रीकृष्णा स्कूल में हुई जीके क्वीज स्पर्धा

हरिभूमि न्यूज ▶▶ महेंद्रगढ़

श्रीकृष्णा सीनियर सेकेंडरी स्कूल में क्वीज प्रतियोगिता आयोजित की गई। प्रतियोगिता में स्कूल के विभिन्न हाउस के विद्यार्थियों ने भाग लिया। मिडल हेड सुरेंद्र कुमार ने बताया कि कार्यक्रम का शुभारंभ मुख्यातिथि चेयरमैन डॉ. बीरसिंह यादव, विशिष्ट अतिथि सीईओ कर्मवीर राव व डॉ. कविता राव रही। अध्यक्षता प्राचार्य रवि प्रकाश ने की। क्विज प्रतियोगिता में स्वामी विवेकानंद हाउस से प्रियांशी, विनय, वंशिका, भूमिका, खुशी व नैंसी ने प्रथम स्थान प्राप्त किया।

एपीजे अब्दुल कलाम हाउस से सक्षम, अमन, रक्षित, महक, विदित्त व लावनया ने दूसरा स्थान प्राप्त किया। कक्षा पांचवीं से विराज व प्रियांशू प्रथम रहे, वहीं कक्षा चौथी से दीपिका व दीपांशी ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। कक्षा यूकेजी से टीम ए से निशू, माहिर व दीक्षा प्रथम, टीम बी से अंशिका, मानवी व नक्ष ने दूसरा तथा टीम सी से वंश, गुंज, प्रियांक ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। चेयरमैन डॉ. बीरसिंह यादव ने कहा कि आज के प्रतिस्पर्धी युग में केवल किताबी ज्ञान पर्याप्त नहीं है। हमारा उद्देश्य केवल परीक्षा पास करना नहीं, बल्कि विद्यार्थियों को हर क्षेत्र में जागरूक और अपडेट बनाना है। सभी विजेता विद्यार्थियों को मेडल और सर्टिफिकेट देकर सम्मानित किया। इस अवसर पर पीआरओ सुधीर यादव, हेड नत्थूराम, हेड संतोष यादव उपस्थित रहे।

महेंद्रगढ़। प्रतियोगिता के भाग लेते विद्यार्थी। फोटो : हरिभूमि

हरियाणा शहद को भावांतर भरपाई योजना में शामिल करने वाला देश का पहला राज्य

अब शहद पर भी मिलेगी भावांतर भरपाई योजना की सुरक्षा

जिले में अब तक 54 मधुमक्खी पालकों ने योजना के तहत अपना कराया पंजीकरण

हरिभूमि न्यूज ▶▶ नारनौल

जिला उद्यान अधिकारी कार्यालय नसीबपुर में शनिवार मधुमक्खी पालकों के लिए एक सेमिनार का आयोजन किया गया। इस अवसर पर जिला उद्यान अधिकारी प्रेम कुमार यादव ने जानकारी दी कि हरियाणा सरकार ने एक अनूठी पहल करते हुए शहद को भावान्तर भरपाई योजना के दायरे में शामिल किया है, जिससे हरियाणा ऐसा करने वाला देश का पहला राज्य बन गया है। इस योजना का मुख्य उद्देश्य बाजार में कीमतों के गिरने पर मधुमक्खी पालकों को वित्तीय सुरक्षा प्रदान करना है। जिले में अब तक 54 मधुमक्खी पालकों ने इस योजना के तहत अपना पंजीकरण कराया है। सरकार ने शहद का आधार मूल्य 120 रुपये प्रति किलोग्राम निर्धारित किया है। यदि बाजार में थोक मूल्य इस सुरक्षित मूल्य से नीचे गिरता है, तो पंजीकृत किसान इस योजना के तहत प्रोत्साहन राशि प्राप्त करने के पात्र होंगे। सेमिनार के दौरान पालकों को आवश्यक दिशा-निर्देश देते हुए बताया गया कि योजना का लाभ लेने के लिए मधुक्रांति या राज्य पोर्टल पर पंजीकरण अनिवार्य है। मधुमक्खी पालकों को अपने खर्च पर प्रत्येक बॉक्स पर परिवार पहचान पत्र के अंतिम चार अंक और क्रम संख्या खुदवाना अनिवार्य किया गया है, ताकि बक्सों की सही पहचान और ट्रेसबिलिटी सुनिश्चित की जा सके। इन बक्सों का भौतिक सत्यापन जिला उद्यान अधिकारी कार्यालय द्वारा किया जाएगा। योजना के तहत एक पालक अधिकतम 1000 बक्सों तक का लाभ ले सकता है और प्रति वर्ष अधिकतम 30 हजार किलोग्राम शहद पर लाभ प्राप्त कर सकता है। व्यापार केंद्र पर बिक्री के लिए शहद को फूड ग्रेड बाल्टियों में लाना होगा, जिन पर किसान का विशेष मार्का और पंजीकरण आईडी होना आवश्यक है।

मधुमक्खी पालकों के लिए सेमिनार का आयोजन

पात्रता और पंजीकरण

योजना का लाभ लेने के लिए सभी मधुमक्खी पालकों का मधुक्रान्ति पोर्टल पर पंजीकृत होना अनिवार्य है। नए पालकों के लिए पंजीकरण की सुविधा भी उपलब्ध है। एक से 30 जनवरी सारी प्रक्रिया रहेगी। महीने की एक से 10 तारीख तक शहद की आवक, 11 से 24 तारीख तक सैंपलिंग/रिपोर्ट और 25 तारीख को नीलामी के लिए निर्धारित की गई है।

पारदर्शी भुगतान प्रणाली

खरीददारों और विक्रेताओं के बीच सुरक्षित लेनदेन सुनिश्चित करने के लिए एस्को खाते का प्रावधान किया गया है। भुगतान सीधे विक्रेता के बैंक खाते में ट्रांसफर किया जाएगा। अधिक जानकारी के लिए जिला उद्यान अधिकारी व ब्लॉक स्तर पर उद्यान विकास अधिकारी से संपर्क करें।

जातियों को सभी सुविधाएं और लाभ देने की मांग

नारनौल। बहुजन समाज पार्टी के नेता अतरलाल एडवोकेट ने घुमंतू और अर्ध घुमंतू जनजातियों में शामिल की गई हरियाणा की जोगी-जंगम-जोगीनाथ, मनियार, भाट, रहबारी और मदारी (हिंदु) जातियों को अभी भी विमुक्त जातियों की तरह सुविधा व लाभ न मिलने पर चिंता जताई है।

उन्होंने राज्य सरकार से शामिल की गई उक्त पांचों जातियों को तत्काल घुमंतू और अर्ध घुमंतू जनजातियों की तरह सभी सुविधाएं व लाभ देने की मांग की है। इस सम्बन्ध में बसपा नेता अतरलाल ने मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी को ज्ञापन भेजकर याद दिलाया है कि पूर्व मुख्यमंत्री मनोहरलाल खट्टर की अध्यक्षता में 25 जून 2019 को हुई कैबिनेट बैठक में प्रदेश की जोगी-जंगम-जोगीनाथ, मनियार, भाट, रहबारी और मदारी (हिंदु) पांच जातियों को भी घुमंतू व अर्ध घुमंतू जनजातियों की सूची में शामिल किया गया था। जिसके तहत राज्य की घुमंतू व अर्धघुमंतू जनजातियों की संख्या 24 से बढ़कर 29 हो गई है। परन्तु सरकार के इस फैसले के छह साल बाद भी शामिल की गई उक्त पांचों जातियों के लोगों को घुमंतू और अर्धघुमंतू जातियों को मिलने वाली सुविधा व लाभ नहीं मिल रहे हैं। ज्ञापन में अतरलाल ने कहा कि उन्हें अटेली विधानसभा क्षेत्र के मणियार और जोगी जातियों के लोगों से शिकायत मिली है कि उन्हें सरकार के इस फैसले का लाभ नहीं मिल रहा है।

एक परिवार पहचान पत्र में से केवल एक किसान एक कृषि यंत्र पर ही ले सकता है अनुदान

कृषि यंत्रों पर अनुदान के लिए किसान 16 तक कर सकते हैं ऑनलाइन

हरिभूमि न्यूज ▶▶| नारनौल

हरियाणा कृषि एंव किसान कल्याण विभाग की ओर से वर्ष 2025-26 में कृषि मशीनीकरण को बढ़ावा देने के लिए आरकेवीवाई स्कीम के स्मैम मद के तहत कृषि यंत्रों पर अनुदान देने के लिए आवेदन आमंत्रित किए हैं। किसान इसके लिए 16 फरवरी तक कृषि विभाग की वेबसाइट www.agriharyana.gov.in पर ऑनलाइन आवेदन कर सकते हैं। वे किसान जो मेरी फसल मेरा ब्यौरा पोर्टल पर सीजन रबी 2024 एवं खरीफ 2025 में पंजीकृत है, वो ही उपरोक्त स्कीम में आवेदन के लिए पात्र होंगे। एक परिवार पहचान पत्र में से केवल एक किसान एक कृषि यंत्र पर ही अनुदान का लाभ ले सकता है। अनुसुचित जाति, लघु एवं सीमातं, महिला किसानों को 50 प्रतिशत व अन्य किसानों को 40 प्रतिशत तक का अनुदान दिया जाएगा। लघु एवं सीमातं श्रेणी का लाभ किसानों को उनके मेरी फसल मेरा ब्यौरा पोर्टल पर पंजीकृत जमीन के आधार पर दिया जाएगा।

आवेदन के लिए यह करें

ऑनलाइन आवेदन के लिए किसान के नाम हरियाणा राज्य में पंजीकृत ट्रैक्टर की वैध आरसी (परिवार के किसी सदस्य के नाम जो परिवार पहचान पत्र में हो) बैंक खाता, पैनकार्ड, परिवार पहचान पत्र एवं आधार कार्ड की आवश्यकता होगी। यदि कोई किसान अनुसुचित जाति से सम्बन्ध रखता है तो उसे अनुसुचित जाती प्रमाण पत्र देना होगा, आवेदन करने वाले किसान को खेत में फसल अवशेष नहीं जलाने बारे, पिछले तीन वर्षों में उसी कृषि यंत्र पर अनुदान न लेने बारे शपथ पत्र भी देना होगा।

इनको उपलब्ध करवाया जाएगा अनुदान

इस स्कीम के तहत विभिन्न कृषि यंत्रों बैट्री, इलेक्ट्रीक, सोलर ऑपरेटिड पॉवर वीडर, राईड ऑन सैल्फ प्रोपेल्ड मल्टी टूलबार, सैल्फ प्रोपेल्ड हाईक्लीयरंश बूमस्प्रेयर, हाई कैपस्टी चाफकटर लोडर के साथ 5 टन से 10 टन प्रति घंटा, 10 टन प्रति घंटा से अधिक एवं चाफकटर मोटर आप्रेटिड), ट्रैक्टर ऑपरेटिड साइलेज पैकिंग मशीन/बेलर (1400-1500 केजी/ऑवर), बैट्री ऑपरेटर फर्टीलाइजर ब्रौडकास्टर, ट्रैक्टर ऑपरेटिड फर्टीलाइजर ब्रौडकास्टर, ट्रैक्टर ऑपरेटिड हाईड्रोलिक प्रेस स्ट्रा बैलर, सब सॉयलर, मल्टीकोप बैड प्लान्टर/रेज्ड बैड प्लान्टर, सैल्फ प्रोपेल्ड राईस ट्रांसप्लान्टर (चार लाईन), विनोविंग फैन, मिलेट मशीन/मिलेट मील, मेज थ्रैशर (ट्रैक्टर ऑपरेटिड)/मैज सलैसर, न्युमैटिक प्लान्टर, ऑयल एक्सपेलर, सुगरकेन थैस कटर 75 इंच साइज, मोबाईल/कॉटन शेडर (ट्रैक्टर ऑपरेटिड), कॉउ डंग ब्रिकेट मशीन, कॉउ डंग डीवाटरिंग मशीन, पैडी मोबाईल ड्रायर, लेजर लैंड लेवलर, रोटावेटर, ट्रैक्टर माउन्टिड पावर वीडर, आलु बोने की मशीन इत्यादि पर अनुदान उपलब्ध करवाया जाएगा। योजना का लाभ लेने के लिए इच्छुक किसान विभाग की वेबसाइट **www.agriharyana.gov.in** पर 16 फरवरी तक ऑनलाइन आवेदन कर सकते हैं।

समय रहते किसान करें आवेदन

सहायक कृषि अभियन्ता इंजीनियर दिनेश शर्मा ने किसानों से कहा है कि वे समय रहते आवेदन करें व योजना का लाभ उठाएं। किसान अधिक जानकारी के लिए उक्त वैबसाइट, सहायक कृषि अभियन्ता, नारनौल या अपने सम्बन्धित खण्ड कृषि अधिकारी/कृषि विकास अधिकारी से सम्पर्क कर सकतें हैं। जिन कृषि यन्त्र निर्माताओं की मशीन/कृषि यंत्र, भारत सरकार द्वारा अधिकृत टैस्टींग सेंटरों से टैस्ट की हुई है और वो कृषि विभाग, हरियाणा की सब्सिडी स्कीमों के तहत अपनी मशीन/कृषि यंत्र देना चाहते हैं। वो कृषि एवं किसान कल्याण विभाग हरियाणा पंचकुला की उपरोक्त वैबसाइट पर अपना पंजीकरण करवाएं।

गांव मेघनवास का किसान अशोक यादव दूसरे किसानों को कर रहा प्रेरित

महेंद्रगढ़ जिले में किसान परंपरागत खेती को छोड़कर हो रहे मालामाल

आलू, प्याज, लहसुन की खेती कर कमा रहा लाखों रुपये, सरकार द्वारा समय-समय पर मिल रही योजनाओं का उठा रहा लाभ

हरिभूमि न्यूज ▶▶| महेंद्रगढ़

महेंद्रगढ़। खेत में लगे आलू दिखाता अशोक यादव। फोटो : हरिभूमि

क्षेत्र में किसान लगातार परंपरागत खेती सरसों, गेहूं और बाजार की कर रहे थे, लेकिन सरकार द्वारा समय-समय पर दी जा रही योजनाओं को अपनाकर परंपरागत खेती को छोड़कर अलग-अलग प्रकार की खेती करने लगे हैं। क्योंकि सरसों, गेहूं और बाजार छह-छह महीने में होने वाली फसले हैं और उनका किसानों को लाभ भी कम मिलता है। कभी बारिश तो कभी ओलावृष्टि और पाला पड़ने से किसानों की फसल में नुकसान हो रहा था। जब से हरियाणा में बीजेपी सरकार आई है, तब से किसान अब खेती की तरफ आगे बढ़ने का रुझान देखने को मिल रहा है।

चार एकड़ जमीन पर लगाई फसल

इसी कड़ी में गांव मेघनवास निवासी रिटायर्ड हेडमास्टर किसान अशोक यादव ने परंपरागत खेती छोड़कर अब वह आलू, प्याज, लहसुन की खेती कर रहा हैं। अशोक यादव ने बताया कि वह अपनी चार एकड़ जमीन पर समय पर अलग-अलग प्रकार की फसल लगाकर लाखों रुपये कमा रहा है और सरकार द्वारा कृषि विज्ञान केंद्र में समय-समय पर किसानों को मिलने वाली सभी सुविधाओं का लाभ भी उठा रहा है। किसान अशोक यादव ने बताया कि उसने एक एकड़ में प्याज, एक एकड़ में आलू और एक एकड़ में लहसुन की फसल लगा रखी है।

नासिक से मंगवाया बीज

अभी थोड़े दिन ही पहले उन्होंने अपने एक एकड़ में प्याज लगा रखी थी। इस प्याज का बीज नासिक से मंगवाया गया था। खेत में बीज रोपण करने के बाद समय-समय पर देसी खाद का प्रयोग किया है और पूरी तरह से ऑर्गेनिक प्याज का उत्पादन किया है। यह प्याज खाने में स्वादिष्ट और मीठी है। खेत से प्याज निकालने के बाद वह उनको कट्टों में भरकर सब्जी मंडी में बेचने का काम करेंगे। क्योंकि इस समय प्याज का भाव तेज चल रहा है और इससे लाखों रुपये की आमदनी होने का उन्हें पूरा भरोसा है। उनकी प्याज की मोटाई और वजन हरियाणा में पहली बार देखने को मिला है। यह उनका कहना नहीं, बल्कि कृषि विज्ञान केद्र के एसडीओ अजय कुमार का कहना है।

ड्रिप सिस्टम लगाकर कर रहा है खेती

उन्होंने महेंद्रगढ़ जिले के किसानों से आह्वान किया है कि परंपरागत खेती को छोड़कर अलग-अलग प्रकार की फसल लगाकर लाखों रुपये कमाए जा सकते हैं। इंसान को यह फसल लगाकर मेहनत करनी चाहिए और उसका फल जल्दी ही मिलता है। उसने यह फसल लगाकर साबित कर दिया है। क्योंकि गेहूं और सरसों की फसल में पानी भी ज्यादा देना पड़ता है और मेहनत भी ज्यादा लगती है। इसलिए वह यह फसल लगा रहा हैं। इसके अलावा उन्होंने बताया कि उनकी फसल को देखने के लिए दूर-दूर के गांव के लोग भी आ रहें हैं। उन्होंने खेतों में ड्रिप सिस्टम लगाकर सूक्ष्म सिंचाई कर रहा हैं, जिससे पानी भी इन फसलों में कम लगता है तथा सीधे जड़ों पानी जाता हैं।

नारनौल। एसडीओ सतीश धानिया को स्मृति चिह्न देकर सम्मानित करते हुए। फोटो : हरिभूमि

कर्मठ एवं ईमानदार अधिकारी रहे हैं एसडीओ सतीश: डायरेक्टर वर्मा

- सतीश धानिया जिस भी कार्य को अपने हाथ में लेते थे, उसे पूरी ईमानदारी एवं सिद्दत से समय रहते पूरा करते थे

हरिभूमि न्यूज ▶▶| नारनौल

एसडीओ सतीश धानिया निगम के मेहनती, कर्मठ एवं ईमानदार अधिकारी रहे हैं। इन्होंने जिस भी काम को हाथ में लिया, उसे पूरा करके ही दम लिया। इनकी सेवाएं निगम के लिए बड़ी प्रेरणादायी रही हैं और इनका कार्यकाल हमेशा याद रखा जाएगा। यह उद्गार बिजली निगम के डायरेक्टर नवीन वर्मा ने एसडीओ धानिया के सम्मान में मालवीय नगर में आयोजित सम्मान समारोह में प्रकट किए।

गांव ढाणी बाठोठा निवासी सतीश धानिया चरखी दादरी जिला के सब स्टेशन झोझू कलां से बतौर एसडीओ सेवानिवृत्त हुए हैं। धानिया बिजली निगम को 32 साल 9 महीने की सेवाएं समर्पित करने उपरांत ससम्मान सेवानिवृत्त हो गए हैं।

डायरेक्टर नवीन वर्मा ने कहा कि बिजली निगम आम आदमी को समर्पित आवश्यक सेवाएं देने वाला विभाग है और सतीश धानिया ने बड़ी सच्ची लगन से कार्य किया। इन्होंने नारनौल में भी सेवाएं दी हैं और जिस भी कार्य को यह अपने हाथ में लेते थे, उसे पूरी ईमानदारी एवं सिद्दत से समय रहते पूरा करते थे।

ये रहे मौजूद

इस मौके पर नगर परिषद की चेयरपर्सन कमलेश सैनी, बीएड कॉलेज के पूर्व प्राचार्य डा. प्रो. शिवताज सिंह, धारूहेड़ा के एसडीओ कृष्ण सैनी, एसडीओ प्रदीप सोनी, जेई अशोक सैनी, जेई प्रथम सुभाष रोहिल्ला, जेई सुरेंद्र जोशी, झौझू से जेई दीपक, राजबीर, प्रदीप, रिटायर्ड सीनियर मैनेजर एसबीआई जयनारायण दुग्गल, बीसी गोठवाल, जयसिंह नारनौलिया, एसडीओ हनुमान सिंह, डिप्लोमा इंजीनियरिंग एसोसिएशन के जिला प्रधान सतपाल सिंह, अकाउंटेंट जयसिंह धौलेड़ा, जेई दलीपसिंह, जेई वेदप्रकाश समेत सैकड़ों गणमान्य लोक उपस्थित रहे।

खबर संक्षेप

2 उम्मीदवारों का दिल्ली एसआई पद पर चयन

कनीना। दिल्ली पुलिस भर्ती का परिणाम जारी होने के बाद कनीना नगर में खुशी व्याप्त है। इस भर्ती में कनीना के दो अभ्यर्थियों को नियुक्ति मिली है। जिस लेकर नगर में उत्साह दिखाई दे रहा है। दोनों प्रत्याशियों का कनीना नगर पालिका की चेयरपर्सन डॉ रिम्पी लोढ़ा व पार्षदों ने सम्मान किया है। उन्होंने बताया कि दिल्ली पुलिस में युवाओं का चयन सब-इंस्पेक्टर पर हुआ है। इस उपलब्धि पर डॉ. रिम्पी लोढ़ा, पार्षदों व बाबा लालगिरी आश्रम पदाधिकारियों ने स्मृति चिन्ह भेटकर परिजनों के साथ खुशी जताई है। जगमाल बोहरा, पंकज सिंह ने भी दोनों चयनित बच्चों के निवास स्थान पर पहुँचकर उन्हें सम्मानित किया। उन्होंने बताया कि दिल्ली पुलिस में चयनित होने वाली वार्ड नम्बर आठ निवासी छात्रा वैशाली तथा वार्ड 10 निवासी सचिन शामिल हैं। इस मौके पर विनोद कुमार, प्रमोद, कुमार, होशियार सिंह, नितेष गुप्ता, मनोनीत पार्षद नीलम कुमारी, पवन मिस्त्री, मनफूल सिंह आर्य, विनय एडवोकेट, सतीश कुमार सहित प्रबुद्धजन उपस्थित थे।

अंडरपास निर्माण की त्रुटियों को दूर करने के लिए सौंपा ज्ञापन

मंडी अटेली। अंडरपास निर्माण संघर्ष समिति एलसी 30 अटेली मण्डी ने संघर्ष समिति के संचालक डॉ. राजेन्द्र प्रसाद खरब की अगुवाई में प्रकाश खरब, हनुमान शर्मा, मास्टर सुबे सिंह के प्रतिनिधि मंडल ने शनिवार को अटेली मण्डी रेलवे स्टेशन मास्टर के मार्फत जीएम उत्तर पश्चिम रेलवे मंडल जयपुर एवं सीजेएम डीएफसीसी आईएल जयपुर को अंडरपास की त्रुटियों को ठीक करने व रेलवे स्टेशन पर स्थाई पुलिस चौकी बनाने के ज्ञापन सौंपा। ज्ञापन में बताया ट्रेक की दक्षिण दिशा में टीनशेड, बरसात का पानी रिचार्ज बोर में डालने, अंडरपास रास्ता की मरम्मत कार्य सहित ज्ञापन पर शीघ्र कार्रवाई करने का अनुरोध किया है।

मिश्रवाड़ा में सड़क धंसने से हादसे का खतरा

नारनौल। मोहल्ला मिश्रवाडा में सड़क धंसने से आम रास्ता अवरूद्ध हो गया है। पूर्व पार्षद दयानंद सोनी ने धंसी सड़क के जल्दी ठीक नहीं करने पर हादसा होने की आशंका जताई है। सोनी ने जानकारी देते हुए बताया कि मौहल्ला मिश्रवाडा में दयानंद पुत्र शिम्भुलयाल उर्फ खूखन सोनी के मकान के साथ लगते हुए मेन रोड की सड़क बरसात एवं घरों की नाली के पानी से सड़क के बीचोंबीच धंसने से गहरा गड्ढा हो गया है, जिससे सारा रोड का रास्ता अवरूद्ध हो गया है और इसके धंसने से साथ के घरों में दरारें आ गई हैं। कोई भी जान-माल की हानी हो सकती है। पूर्व पार्षद दयानंद सोनी ने बताया कि इस बारे में पिछले कुछ महीनों पहले से ही साथ लगते मकान मालिक दयानंद सोनी पुत्र शिम्भुलयाल उर्फ खूखन सोनी द्वारा इस समस्या के बारे में एक लिखित शिकायत नगर परिषद में दर्ज भी कराई थी। उन्होंने कहा कि इस सड़क के साथ लगते हुए एक बहुत पुरानी खंडहर हवेली है। इस खंडहर हवेली का तमाम निकासी पानी भी इस गढ़े में लगातार जा रहा है, जिससे भी पानी इस गढ़े में लगातार जाने से यह सड़क धंस गई है। वर्तमान नगर पार्षद अजय सिंघल एवं नगर परिषद अधिकारियों ने इस मामले पर जल्द संज्ञान लेने का आश्वासन दिया है। जनहितैषी समस्या होने के कारण तमाम मोहल्ला वासी भी इस समस्या पर जल्द संज्ञान लेकर कार्रवाई करने की अपील करते हैं। दयानंद सोनी पूर्व पार्षद एवं पूर्व ग्रीवेंस सदस्य दयानंद सोनी ने भी मौके पर जाकर निरीक्षण करते हुए इस पर अविलंब कार्रवाई करने की मांग की है।

केनरा बैंक से बीगोपुर निवासी पप्पूराम यादव सेवानिवृत्त

नारनौल। शहर के आदर्श नगर में रह रहे ग्राम बिगोपुर निवासी पप्पूराम यादव केनरा बैंक में सेवा में सेवाएं देने उपरांत सेवानिवृत्त हो गए। इससे पहले पप्पूराम यादव भारतीय सेना के चिकित्सा कोर में भी सेवाएं अर्पित कर चुके हैं। तब सेना से सेवानिवृत होते ही अगले ही दिन सिंडिकेट बैंक में लिपिक के पद पर ज्वाइन किया। सिंडिकेट बैंक का विलय केनरा बैंक में होने के उपरांत उन्होंने केनरा बैंक नारनौल व महेंद्रगढ़ में अपनी सेवाएं दी। पप्पूराम यादव बैंक में बेदाग साफ छवि की नौकरी के लिए जाने गए और दोनों ही नौकरियों में रिकॉर्ड बेहतरीन रहा। करीब 38 वर्षों की लंबी नौकरी की। वरिष्ठ प्रबंधक केनरा बैंक मोनू यादव ने बताया कि पप्पू यादव कभी गुस्सा नहीं करते और ग्राहकों से सदैव मिलनसार रहे। इनके विदाई समारोह में केनरा बैंक के वरिष्ठ प्रबंधक हेमंत शर्मा, प्रबंधक अजीत सिंह, सतवीर सिंह, यशराज, प्रदीप सिंह ओंकार, बैंक प्रबंधक नवीन कुमार, बैंक प्रबंधक कुलदीप शर्मा व अमित कुमार के साथ-साथ राव रमेश बोहरा अध्यक्ष, रामावतार यादव, मोहर सिंह, पूर्व वरिष्ठ मैनेजर राव होशियार सिंह, शेरसिंह डीपी, यदुवंशी स्कूल डॉक्टर जसवंत सिंह, कंवर सिंह सरपंच बिगोपुर, मास्टर विजय सिंह, मास्टर शेरसिंह आर्य, सूबेदार ज्ञानी राम, रविंद्र हवलदार, रोहतास, दीपक यादव, पूर्व पार्षद सुरेंद्र यादव, दिनेश बाबूजी, अनिल मीणा हरियाणा पुलिस व चिराग आदि मौजूद रहे। इस मौके पर उन्होंने 3 फरवरी को पुनः हनुमानजी की सवामणि में सबको प्रसाद ग्रहण करने का निमंत्रण भी दिया।

3 से 7 फरवरी तक आयोजित होगा पंच कुंडीय रुद्र महायज्ञ

नारनौल। श्री रामेष्ट हनुमान मंदिर श्री तेजादास आश्रम ग्राम पटीकरा में प्रथम भव्य पंच कुंडीय रूद्र महायज्ञ का आयोजन किया जाएगा। इस विषय में जानकारी देते हुए आश्रम के महंत नंदकिशोर महाराज ने बताया कि यह सप्तदिवसीय कार्यक्रम होगा, जिसका शुभारंभ दो फरवरी को कलश यात्रा द्वारा किया जाएगा। तीन फरवरी से सात फरवरी तक पंच कुंडीय रुद्र महायज्ञ व आठ फरवरी को विशाल अमृतमयी भंडारा आयोजित किया जाएगा। यह धार्मिक अनुष्ठान यज्ञाचार्य क्रांति निर्मल शास्त्री के सानिध्य में आयोजित किया जाएगा। यज्ञाचार्य क्रांति निर्मल शास्त्री ने बताया कि महायज्ञ कार्यक्रम के अंतर्गत प्रतिदिन वैदिक मंत्रोच्चारण के साथ रुद्राभिषेक किया जाएगा और रुद्र सूक्त के माध्यम से यज्ञ में आहुति डलवाई जाएगी। उन्होंने इस अनुष्ठान के महत्व पर प्रकाश डालते हुए बताया कि यह मनोकामना पूर्ण करने वाला महायज्ञ है। जिस प्रकार कल्पवृक्ष व कामधेनु गाय माता सभी के मनोरथ पूर्ण करती है, उसी प्रकार यज्ञ नारायण देवता सभी की मनोकामना पूर्ण करते हैं। इस महायज्ञ कार्यक्रम में ग्रामवासियों के अलावा दूर-दराज के श्रद्धालुगण भी उपस्थित रहेंगे।

हरिभूमि
आवश्यक सूचना
जिन पाठकों को अखबार मिलने में किसी भी प्रकार की असुविधा हो रही हो या उनके घर में कोई अन्य अखबार दिया जा रहा हो वह इन टेलीफोन नम्बरों पर सम्पर्क करें या व्हाट्सअप करें :-
महेन्द्रगढ़ :- हरिभूमि कार्यालय, हुड्डा पार्क के सामने, डाक्टर भगत डैंटल अस्पताल वाली गली, नजदीक बस स्टैंड, महेंद्रगढ़।
नारनौल :- सत्य प्लाजा, प्रथम तल, तरूण कलर लैब वाली गली, नजदीक बस स्टैंड, नारनौल
फोन : 8295738500, 9253681005

मोड़ी में वर्षों पूर्व डाली गई पेयजल पाइपलाइन को उखाड़ने तथा बहुत गहराई से नाला खुदाई करने पर रोष

पंचायत पर लगाया राशि के दुरुपयोग का आरोप

- कनीना उपमंडल के गांव मोड़ी में गोमला मार्ग पर किया जा रहा है कार्य
- ग्रामीणों ने जिला प्रशासन सहित प्रदेश के सीएम को भेजी शिकायत

हरिभूमि न्यूज ▶▶| कनीना

उपमंडल के गांव मोड़ी में वर्षों पूर्व डाली गई पेयजल पाइपलाइन को उखाड़ने तथा बहुत गहराई से नाला खुदाई करने पर ग्रामीणों ने पंचायत पर सरकारी राशि का दुरुपयोग करने का आरोप लगाया है। ग्रामीण पवन कुमार ने इस बारे में एसडीएम, डीसी सहित मुख्यमंत्री को शिकायत भेजी है। जिसमें उन्होंने गांव की महिला के पति पर आरोप जड़ा है। ग्रामीणों ने कहा कि सरपंच पति द्वारा ग्राम पंचायत मोड़ी में पानी के निकासी के लिए गंदे नाले का निर्माण किया जा रहा है। जिसके माध्यम से गंदा पानी कृष्णावती नदी व वाटरशेड योजना के माध्यम से जल संरक्षण के लिए बनाए गए जोहड़ में डालने की योजनाबद्ध तरीके से तैयारी की जा रही है। पवन कुमार ने बताया कि 33 फुट चौडे गोमला रास्ते से मिट्टी को हटाया जा रहा है। इसके साथ ही पेयजल पाइप लाइन को उखाड़ा जा रहा है। इस कार्य के लिए अधिक गहराई से मिट्टी खुदाई कर इधर-उधर डालकर माइनिंग नियमों की अवहेलना की जा रही है वहीं पेयजल लाइन का ब्रेक करने से कुछ ग्रामीण पेयजल से वंचित हो गए। इतना ही नहीं पाइप लाइन को उखाडते समय पंचायत ने जन स्वास्थ्य एवं अभियांत्रिकी विभाग से भी कोई अनुमति नहीं ली गई। जिससे सरकारी राशि का दुरूपयोग हो रहा है। उन्होंने बताया कि कृष्णावती नदी व नदी के साथ बने जोहड़ के अंदर गंदा पानी डालने के लिए अधिकारिक रूप से कोई सहमति नहीं ली गई है।

क्या कहती है सरपंच

इस बारे में महिला सरपंच अनिता देवी के पति रामनिवास ने बताया कि मोडी से गोमला मार्ग पर गंदे पानी की निकासी के लिए नाले का निर्माण कार्य पंचायत समिति की ओर से किया जा रहा है। जिसे बंजर भूमि में डाला जाएगा। उन्होंने कहा कि पिछली पंचायत ने बिना पैमाइश के पानी की पाइप लाइन दबाई गई थी। ये लाइन बीपीएल परिवारों को अलाट किए गए प्लाट धारकों की सुविधा के लिए है। पैमाइश करवाने के बाद उसे रास्ते के माध्यम से पाइप दबाए जा रहे हैं। पंस की ग्राट से नाले का निर्माण कार्य किया जा रहा है।

कनीना। मोडी गांव में खुदाई कर निकाली जा रही पेयजल पाइप लाइन का दृश्य।

हरिभूमि
रविवार भारती
haribhoomi.com
छत्तीसगढ़, दिल्ली, हरियाणा और मध्यप्रदेश से एक साथ प्रकाशित
रोहतक,रविवार 1 फरवरी 2026

दुनिया की भीड़ में क्यों बढ़ रहा है अकेलापन

देश-दुनिया की आबादी भले ही दिनों-दिन बढ़ रही हो, लेकिन इसके उलट लोगों का अकेलापन भी बढ़ रहा है। अकेलेपन की समस्या विश्वव्यापी है। भारत समेत अनेक देशों के लोग इस समस्या का सामना कर रहे हैं। अकेलेपन का हमारे स्वास्थ्य ही नहीं पूरे जीवन पर दुष्प्रभाव पड़ता है। ऐसे में यह बहुत जरूरी है कि इसके कारणों को जाना जाए और इसे दूर करने का हर संभव प्रयास किया जाए।

{ कवर स्टोरी
एस. भाग्यम शर्मा }

यह सही है कि दुनिया में आठ अरब से अधिक और हमारे अपने देश में 140 करोड़ से अधिक लोग रहते हैं। लेकिन दुख की घड़ी में शायद ही एक कंधा ऐसा मिले, जिस पर सिर रखकर हम रो सकें। सोशल मीडिया पर भले ही हमारे हजारों दोस्त होंगे, फॉलोअर्स होंगे, लेकिन असल जिंदगी में एक भी हमारे साथ नहीं होता। यानी आज लोगों की भीड़ में भी हर कोई खुद को अकेला महसूस कर रहा है।

स्वास्थ्य के लिए हानिकारक

अगर कोई शारीरिक बीमारी हो तो इसका असर दूसरों को नजर आता है। अकेलेपन का दुष्प्रभाव धूम्रपान और मोटापे की तरह शरीर पर नजर नहीं आता है। दरअसल, अकेलापन हमारे मन को बीमार बना देता है। अकेलापन एक दिन में 15 सिगरेट पीने से भी ज्यादा खतरनाक असर हमारे स्वास्थ्य पर डालता है।

अकेलापन समय से पहले मृत्यु के खतरे को 25% तक बढ़ा देता है। अकेलेपन से ब्रेन स्ट्रोक और हृदय रोग का खतरा 30% तक बढ़ता है। यह डिमेंशिया के खतरे को 50% तक बढ़ा देता है, इसलिए यह बहुत आवश्यक है कि समय रहते अकेलेपन की इस बीमारी को पहचान लें और यह जानें कि कहीं आप भी अकेलेपन के अंधेरे में खोते तो नहीं जा रहे हैं।

दुनिया भर में लोग हैं परेशान

वर्ष 2023 में विश्व स्वास्थ्य संगठन ने अकेलेपन को एक वैश्विक स्वास्थ्य संकट घोषित किया था। अकेलेपन को परिभाषित करते हुए डब्ल्यूएचओ ने कहा था कि अकेलापन व्यक्ति की अपनी भावनात्मक पीड़ा है, जो सामाजिक अलगाव और सार्थक रिश्तों की कमी से पैदा होती है। आज के दौर में अकेलापन दुनिया भर में एक गंभीर बीमारी का रूप ले चुका है। जापान और दक्षिण कोरिया जैसे देशों में कई लोग इस कदर अकेले हो चुके हैं कि अगर उनकी मृत्यु भी हो जाए तो कई-कई दिनों तक बाहरी दुनिया को उनकी मौत के बारे में पता ही नहीं चलता।

वहां से आई खबरों के अनुसार पिछले साल जापान में करीब 76,000 लोगों की उनके घर में अकेले रहते हुए मौत हुई। 4,000 लोग ऐसे थे, जिनके मरने के करीब एक महीने के बाद बाहर के लोगों को उनकी डेड बॉडीज मिलीं। जापान में तो अकेलेपन को दूर करने के लिए ज्यादा उम्र के लोग कई बार जान-बूझकर अपराध करने के लिए भी तैयार हो जाते हैं, जिससे उन्हें सजा मिले और सजा के बाद वे जेल में दूसरे लोगों से मिलकर कुछ बातचीत कर सकें, उनका अकेलापन दूर हो, उनका मन लग सके।

बढ़ रहे हैं एकल परिवार

भारत में भी अकेलापन तेजी से फैल रहा है। इसकी मुख्य वजह है भारतीय समाज में टूटते संयुक्त परिवार। पहले के दौर में हमारे घर-परिवार में साथ रहने वाले अपने माता-पिता, दादा-दादी, नाना-नानी के साथ हम अपना सुख-दुख शेयर कर लिया करते थे। लेकिन अब वह दौर नहीं रहा। अब संयुक्त परिवारों की जगह एकल परिवारों ने ले ली है, जहां परिवार में पति-पत्नी ही रहते हैं। कई कपल तो बच्चे तक पैदा नहीं करना चाहते। बच्चे इसलिए नहीं पैदा करना चाहते, क्योंकि वे जानते हैं कि अगर बच्चे हुए तो उनकी देखभाल करने वाला परिवार में कोई नहीं है। महानगरों में 'ड्यूल इनकम-नो किड्स' का चलन बढ़ रहा है।

बढ़ती सामाजिक दूरी भी है वजह

पिछली सदी तक हम सब अनजान लोगों से भी बातचीत कर लिया करते थे। कोई रास्ता पूछता था तो बड़े मन से उसे रास्ता बताते, कई बार तो उन्हें उनके गंतव्य तक छोड़ कर आ जाते थे। बाजार जाते तो किराने की दुकान या सब्जी की दुकान पर दुकानदार से बातचीत कर लिया करते थे। अड़ोसी-पड़ोसी से उनका हाल-चाल पूछ लिया करते थे। चाय की दुकानों पर जाने-अंजाने लोग भी खूब बतियाते थे। लेकिन अब ऑनलाइन शॉपिंग के बढ़ते ट्रेंड से लोगों का बाजार आना-जाना भी बहुत कम हो गया है। सब इतने व्यस्त हो गए हैं कि किसी के पास समय ही नहीं रह गया है, एक-दूसरे की खबर लेने का।

बच्चे-युवा भी हो रहे प्रभावित

2021 के ग्लोबल सर्वे के मुताबिक, अकेलेपन से प्रभावित होने वाला तीसरा सबसे बड़ा देश भारत है। इस रिपोर्ट के अनुसार, भारत के शहरों में 43% लोग अकेलापन महसूस करते हैं। चिंताजनक बात यह है कि 13 से 15 साल की उम्र के 25 % बच्चे भी अकेलापन अनुभव कर रहे हैं। सोशल मीडिया की वजह से भी अकेलापन तेजी से बढ़ रहा है। कई स्टडीज में सामने आया है कि सोशल मीडिया की लत, युवाओं में अलगाव, अकेलापन और डिप्रेशन को बढ़ा रही है।

मशीनी हो रही भावनाएं

अकेलापन इसलिए भी बढ़ रहा है कि लोग एक-दूसरे के साथ अपनी भावनाएं साझा नहीं करते हैं। सोशल मीडिया में कोई इमोजी भेजकर खुद को दायित्वमुक्त समझ लेते हैं। आजकल लोगों को लगता है कि भावनाओं को व्यक्त करने के लिए किसी की आंखों में आंख डालने की जरूरत नहीं है। किसी का हाथ थामने की जरूरत नहीं है। लोगों को लगता है कि भावनाओं को व्यक्त करने के लिए इमोजीज भेजना ही पर्याप्त है। यानी जब हम दुखी महसूस करते हैं तो हमारे साथ किसी की वास्तविक भावनाओं के स्थान पर ढेरों इमोजीज होते हैं।

अकेलापन दूर करने का करें प्रयास

हमें बचपन से ही सिर्फ यह सिखाया जाता है कि सफलता ही खुशी का सबसे बड़ा पैमाना है और जीवन में हर कीमत पर सफल होना सबसे जरूरी है। जो सफल है, वह खुश भी रह लेगा। हमें रिश्तों की अहमियत नहीं सिखाई जाती। सफलता और अधिक से अधिक पैसा, सुख-सुविधाएं अर्जित करने की अंधी दौड़ में ज्यादातर लोग अपने रिश्तों को पीछे छोड़ देते हैं। जाहिर है, इससे जीवन में अकेलापन आएगा ही। अकेलापन किसी सफलता से या दौलत कमाने से या शानदार करियर से नहीं, अपनों के साथ होने से दूर होता है। इसलिए अगर आप भी अकेलापन महसूस करते हैं तो सोशल मीडिया पर ही नहीं अपने दोस्तों, रिश्तेदारों से मिलने उनके घर जाइए, उन्हें अपने घर बुलाइए। परिवार के साथ समय बिताइए। अंजान लोगों से भी बात करने में न हिचकिचाइए। यही नहीं अगर आपके परिवार में या आस-पास कोई ऐसा व्यक्ति है, जो अकेलापन महसूस कर रहा है तो उससे बात कीजिए। उसके अकेलेपन को दूर करने का प्रयास कीजिए। जरूरत पड़ने पर काउंसलर की मदद भी ले सकते हैं। ऐसा करने से उस व्यक्ति का अकेलापन तो दूर होगा ही, आपको भी आत्मीय खुशी, संतुष्टि मिलेगी। *

कई देशों में हो रही नई पहल

अकेलेपन की समस्या से निपटने के लिए अलग-अलग देशों में अब कई तरह की पहल की जा रही है। जैसे दक्षिण कोरिया में बुजुर्गों के लिए हैप्पी कैब्स चलाई जा रही हैं। यह एक कैब सर्विस है, जिसमें बुजुर्ग लोग अंजान लोगों के साथ बैठकर घूमने जा सकते हैं। उनसे बातचीत कर सकते हैं, अपने सुख-दुख साझा कर सकते हैं। इससे उन्हें अपना अकेलापन दूर करने में मदद मिलती है। इसी तरह अकेलेपन की समस्या के समाधान को तलाशने के लिए ब्रिटेन ने वर्ष 2018 में ही लोनलीनेस मिनिस्टर की नियुक्ति शुरू कर दी थी। एक अलग मंत्रालय, एक अलग मंत्री, जो सिर्फ यह देखेगा कि देश में लोगों के अकेलेपन को कैसे दूर किया जा सकता है? वहां अकेलेपन से जूझ रहे लोगों को काउंसिलिंग और मेडिकल सपोर्ट उपलब्ध कराए जाते हैं।

जिंदगी को खुशमिजाज बनाना हमारे ही हाथों में होता है। अगर हम अपनी रोजमर्रा की जिंदगी में कुछ बदलाव कर लें, कुछ आदतों को शामिल कर लें तो हमारी जिंदगी खुशमिजाज बन सकती है। ऐसा किस तरह हो सकता है, जानिए।

जीने के अंदाज में करें बदलाव खुशमिजाज हो जाएगी जिंदगी

{ लाइफस्टाइल
शिखर चंद जैन }

हमारा दिमाग ही हमारी सोच और नजरिए का स्रोत होता है। जब दिमाग अशांत या उद्वेलित रहता है तो हमें हर चीज में उथल-पुथल, नकारात्मकता और बुराई नजर आती है। लेकिन जब दिमाग शांत रहता है, हम खुशमिजाज रहते हैं तो हमें हर चीज सकारात्मक अच्छी और सही लगती है। खुशमिजाजी और सुकून के लिए कुछ बातें और आदतें अपनानी जरूरी हैं।

लोगों से बनाए अच्छे संबंध

भले ही सबको खुश रखना दुनिया का सबसे कठिन काम है लेकिन सबके साथ खुश रहना दुनिया का सबसे आसान काम है। हार्वर्ड स्टडी ऑफ एडल्ट डेवलपमेंट के डायरेक्टर और मनोचिकित्सक रॉबर्ट वालडिंगर का कहना है कि लोगों के साथ मजबूत और मधुर संबंध खुशी की प्रमुख वजह बन सकते हैं। ये लोग रोमांटिक पार्टनर, आपके दोस्त, बच्चे, सहकर्मी, पड़ोसी, रिश्तेदार या भाई-बहन कोई भी हो सकते हैं। भले ही हम सब स्वतंत्रता को खास मानते हों, लेकिन यह ना भूलें कि हम सब एक-दूसरे पर निर्भर होते हैं। जब हम अपने इर्द-गिर्द मौजूद लोगों के साथ अच्छे संपर्क रखते हैं तो मानसिक खुशी तो मिलती ही है, एक बड़ा सपोर्ट सिस्टम भी मिलता है, जो हमें हर तरह से सुकून देता है।

अजनबियों से करें बातचीत

ओटावा (कनाडा) की कार्लटन यूनिवर्सिटी के मनोविज्ञानी जॉन जेलवेंसकी कहते हैं कि आपको एक्सट्रोवर्ट होना चाहिए। अंतर्मुखी, गंभीर और चुप्पी साध कर रहने वाले लोग उदास रहते हैं, जबकि सबसे आसानी से घुल-मिल जाने वाले और अजनबी लोगों से बातचीत करने की कला जानने वाले अकसर खुशमिजाज रहते हैं। साथ ही ऐसे लोग आसानी से अपना सोशल सर्किल और बिजनेस सर्किल भी बढ़ा लेते हैं, जिससे इन्हें सफलता मिलती है। जाहिर है, सफलता भी खुशी मिलने की एक महत्वपूर्ण वजह है।

पालतू के साथ समय बिताएं

वाशिंगटन स्टेट यूनिवर्सिटी द्वारा किए गए एक ताजा अध्ययन में पाया गया कि पालतू जानवर के साथ बिताया गया 10 मिनट का समय भी दिमाग को सुकून देने वाला होता है। इससे कार्टिसोल नामक स्ट्रेस हार्मोन का स्तर गिरता है। अमेरिकी नागरिकों द्वारा किए गए एक शोध में पाया गया कि सबसे ज्यादा सुकून देने वाले पालतू कुत्ते होते हैं।

कुदरत को निहारें

यूनिवर्सिटी ऑफ कैलिफोर्निया के शोधकर्ताओं ने 90 स्टूडेंट्स पर किए गए शोध में पाया कि कुदरत को निहारना मन को सुकून देने वाला एहसास होता है। जब हम पेड़-पौधों और जीव-जंतुओं को निहारते हैं तो हमारा ध्यान परेशानियों से हटकर पूरी तरह उन्हीं पर लग जाता है। इससे दिमाग को सुकून मिलता है।

फल-सब्जी ज्यादा खाएं

सोशल साइंस एंड मेडिसिन जर्नल में प्रकाशित ताजातरीन स्टडी रिपोर्ट में कहा गया है कि प्रचुर मात्रा में फल और सब्जी खाने से खुशमिजाजी और सुकून मिलता है। इसलिए रोज कच्ची सब्जियों का सलाद और फल खाएं। सबसे बड़ी बात यह है कि अगर आप खान-पान, आराम और सोने का समय निर्धारित कर लेते हैं तो आपका हैप्पीनेस लेवल बढ़ जाता है। न्यूट्रीशन, एक्सरसाइज और रेस्ट, खुशी के मूल मंत्र हैं।

वाटर बॉडीज के पास जाएं

जर्नल आफ एनवॉयर्नमेंटल साइकोलॉजी में प्रकाशित एक अध्ययन में पाया गया कि पानी के संग्रह स्थल नजदीक रहने से लोगों में पॉजिटिव इमोशंस का संचार होता है। स्विमिंग पूल, समुद्र या नदी के किनारे खड़े होकर पानी की हलचल को निहारना सुकून देता है। इससे स्ट्रेस लेवल भी कम होता है। *

इन पर भी करें अमल

जीवन के हर आयाम को बराबर समय देने की कोशिश करें, जैसे- परिवार, व्यापार, मित्र, जीवनसाथी, समाज आदि क्षेत्रों में सक्रिय रहें। हंसी-मजाक करें, लेकिन दूसरों का मजाक ना उड़ाएं। कई बार इससे स्थिति बिगड़ जाती है और तनाव का सामना करना पड़ता है। इसके अलावा नए अनुभवों पर पैसा और समय खर्च करें। उन कार्यों को करे, जो आपने कभी नहीं किया और देखा। जैसे हॉर्स राइडिंग करना, घुड़दौड़ देखना, अंडरवाटर स्पोर्ट देखना या इसमें शामिल होना, थिएटर में जाकर नाटक देखना, किसी बर्फीले स्थान की यात्रा करना आदि।

{ व्यंग्य
अंशुमान खरे }

गणित में बचपन से ही हम बगैर होशियार होकर भी होशियार थे। न मालूम गणित के मास्साब कहां-कहां से सवाल लाते थे, लेकिन पिटते-पिटाते किसी तरह गणित में पास कर दिए जाते थे। घर वालों की तमन्ना डॉक्टर, इंजीनियर बनाने की थी। कक्षा में हमेशा अपराधी की तरह बैठे रहते थे। गणित के गुरु जी हमेशा हमें अंतरराष्ट्रीय गणितज्ञ बनाने का मजाक करते रहते थे। पर हमें कुछ भी समझ नहीं आता। हमारे गणित के गुरु जी फिरकी लेते थे कि मुझे भगवान भी नहीं समझा सकते। गणित की क्लास हमारे लिए आफत से कम नहीं थी। मास्साब के सवाल भी माशाअल्लाह अद्भुत होते थे। एक औरत एक काम को चार घंटे में पूरा कर लेती है तो बताओ उसी काम को आठ औरतें कितने समय में पूरा करेंगी? मैं कहता, 'आठ औरतें काम तो पूरा कर नहीं पाएंगी। हां, रायता जरूर फैला देंगी।'

सवाल से सवाल निकालने की कला में हमारे मास्साब का कोई सानी नहीं था। कपड़े पर अटक गए तो उसी से जुड़े सवाल पर सवाल पूछने लगते, 'बताओ बच्चो, अगर एक साड़ी धूप में एक घंटे में सूखती है तो चार साड़ियां सूखने में कितना समय लेंगी?'

बहुत सरल सवाल सोचकर मैं हाथ उठाकर बोल पड़ा, 'वेरी सिंपल, चार घंटे।' मास्साब जवाब सुनकर आपे से बाहर हो गए। मैं समझ नहीं पा रहा था, मास्साब को सीधा-सा गुणा करना नहीं आता क्या?

मैंने हिम्मत करके एक सवाल पूछ लिया, 'गुरु जी, अगर एक गांव में एक गाय है और वह दो लीटर दूध देती है तो बताइए गांव वाले चालीस-चालीस लीटर दूध बाहर कैसे सप्लाई करते हैं?' मास्साब का माथा ठनका और तमतमा कर क्लास से बाहर चले गए। मेरा सवाल अनुत्तरित रह गया। मेरे सवाल पर क्लास में चर्चा होने लगी। सब हैरान। प्रश्न तो उचित है। मास्साब नाराज क्यों हो गए? गणित के मास्साब का वैसे भी स्कूल में काफी जलवा था। प्रधानाचार्य से लेकर सभी अध्यापक और छात्र उनको आदर की दृष्टि से देखते थे। दूध की सप्लाई का सवाल गणित के मास्साब के गले की फांस बन गया। कुछ दोस्तों ने कहा, 'पानी मिला लेते होंगे।'

पर इतना पानी मिलाकर दूध रह ही नहीं पाएगा। सब पानी-पानी हो जाएगा।

मास्साब इस बात को पता लगाने में जी-जान से जुट गए कि इस प्रश्न को किसके इशारे पर उनसे पूछा गया है। यह किस अध्यापक की साजिश है, पता लगाना जरूरी है। गणित के मास्साब को पहली बार किसी सवाल पर नर्वस होते देखा। इसलिए मैं बार-बार उनसे इस प्रश्न को पूछता रहा। मास्साब को भी समझ नहीं आ रहा था कि कौन-सा फार्मूला लगाएं कि दो लीटर दूध बराबर चालीस लीटर दूध हो जाए। कुछ तो गड़बड़ है। इस तरह के सवाल किसी किताब में नहीं होते हैं। मास्साब मेरे प्रश्न में उलझते जा रहे थे। मैं उनकी तरफ आशाभरी दृष्टि से टकटकी लगाकर धैर्य से देखता रहता था।

मेरे प्रश्न को दूर-दूर तक पहुंचाया गया। कहीं से समस्या का समाधान निकले। प्रधानाचार्य जी ने ऐसा गांव पहचाना, जहां के लोग दो लीटर दूध से चालीस लीटर दूध बनाने में सफल हुए हैं। उन्होंने गांव के लोगों को सम्मानित करने की योजना बनाई। गांव के प्रधान गांव को सम्मानित करने के नाम से उत्साहित दिखे। ऐसे प्रतिभाशाली लोगों की ओर सबका ध्यान खींचने के लिए मुझे भी मालाओं से लाद दिया गया। क्षेत्र के विधायक, सांसद, सभी ने गांव को सम्मानित करने में रुचि दिखाई। श्वेत क्रांति के लिए पूरे गांव के लोगों को बधाई देने वालों का तांता लग गया। शासन, प्रशासन ने भी गांव को सम्मानित करने के सुर में सुर मिला दिया। जिलाधिकारी से लेकर सारे कर्मचारी मुस्तैदी से सम्मान समारोह की तैयारी में जुट गए हैं। लेकिन मैं और गणित के मास्साब प्रश्न अनुत्तरित रहने से चिंतित हैं। हम दोनों शून्य में उत्तर खोजने की कोशिश कर रहे हैं। दुग्ध क्रांति की गुत्थी उलझती जा रही है। सुना है कि गांव के सम्मान समारोह में प्रदेश के मुख्यमंत्री भी आएंगे और ऐसी प्रतिभाओं को सम्मानित करेंगे, जो दो लीटर दूध से चालीस लीटर दूध सप्लाई करने का 'हुनर' जानते हैं। *

गणित के मास्साब को पहली बार किसी सवाल पर नर्वस होते देखा। इसलिए मैं बार-बार उनसे इस प्रश्न को पूछता रहा। मास्साब को भी समझ नहीं आ रहा था कि कौन-सा फार्मूला लगाएं कि दो लीटर दूध बराबर चालीस लीटर दूध हो जाए। कुछ तो गड़बड़ है।

प्रतिभा सम्मान

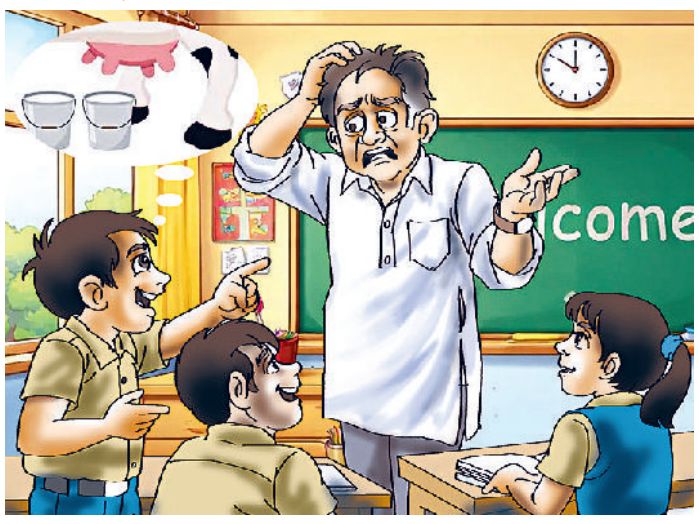

{ लघुकथा / निशा भास्कर }

छांव से दूर

अस्पताल जाते समय सड़क की भीड़ और अब वहां सैकड़ों की संख्या में कतारबद्ध खड़े लोगों को देखकर बाबूजी बोले, 'महानगरों के सड़कों पर दौड़ती-हांफते वाहनों के साथ, यहां का आम जीवन थरथराते हुए गुजरता है।'

'राजधानी में अच्छी सुविधा मिलेगी, यह सोचकर सभी राज्यों से लोग आकर यहां बसना चाहते हैं और बसते भी हैं, इसलिए भीड़ तो होगी ही।' बाबूजी की ओर देखकर मयंक धीरे से बोला। बाबूजी बड़ी मुश्किल से इलाज के लिए अपना घर और गांव छोड़कर अपने बेटे मंयक के पास इस महानगर में आए थे। कहीं बाबूजी गांव वापस जाने की जिद्द न करने लग जाएं, यह ख्याल आते ही मयंक बोला, 'बाबूजी एक बार आपका अच्छी तरह से इलाज हो जाए बस और हमें क्या चाहिए!' 'अरे बेटा! मुझे लगता है यहां तो हम और भी बीमार हो जाएंगे। स्वस्थ क्या खाक होंगे?' कहकर वे तेज-तेज खांसने लगे। उनकी आंखें भी लाल हो गईं। मयंक ने घबराकर इधर-उधर देखा। अस्पताल का प्रतीक्षालय पूरी तरह से भरा हुआ था। एक भी सीट खाली नहीं थी, जहां बाबूजी को वह बैठा सके। एक व्यक्ति जो उसी की तरह दिख रहा था। मयंक ने उसे आग्रहपूर्ण नजरों से देखा। उस व्यक्ति ने खड़े होकर बाबूजी को बिठाने का इशारा किया। मयंक ने बाबूजी को बिठाया और दोनों हाथ जोड़कर उस व्यक्ति का आभार व्यक्त किया और बाबूजी से बोला, 'मैं अभी आया।' फिर वह शीघ्रता से अस्पताल से बाहर निकल गया। थोड़ी ही देर में पानी की बोतल लेकर आया और बाबूजी को पानी पिलाकर बोला, 'आप चिंता न करें, हम जिस डॉक्टर से दिखाने के लिए आए हैं, उनका बहुत नाम है। उनके इलाज से कितना भी पुराना रोग, ठीक हो जाता है।' बाबूजी, बेटे की बात सुनकर बोले, 'अरे! यह तो बुढ़ापे का रोग है। खांसना-खंखारना तो लक्षण है, बुढ़ापे का। लेकिन बेटा, मेरी एक बात ध्यान से सुन, यह शहर बड़ा है, डॉक्टर बड़ा है पर हम तो बड़े लोग नहीं हैं न! बड़ा शहर और इसकी सुविधाएं बड़े लोगों के लिए होती हैं। हम इनके फोटो देखकर अपने से झूठ बोलते हैं कि मैं भी इसका हिस्सा हूं। पर हमारी इतनी औकात नहीं है।' मयंक की आंखें गीली हो गईं। वह बोला, 'सच कह रहे हैं बाबूजी! बीस साल की नौकरी में क्या ही कर लिया मैंने? आज तक बीवी बच्चों को इस शहर में एक छत भी न दे सका।' बेटे को इस तरह उदास देखकर बाबूजी उसके सिर पर हाथ रखकर बोले, 'बेटा हम अपने गांव चलेंगे। वहीं के अंग्रेजी स्कूल में मेरी पोती पढ़ेगी और मैं अपने बड़े से आंगन में नीम की छांव तले बैठकर उसके साथ खेलूंगा और' तभी नर्स ने टोकन नंबर बहत्तर रामजस को आवाज दी। मयंक बाबूजी का हाथ थाम कर बोला, 'चलिए बाबूजी, अपना नंबर आ गया।' *

{ पुस्तक चर्चा / विज्ञान भूषण }

अलग मिजाज की कहानियां

वरिष्ठ कथाकार हबीब कैफी की चुनी हुई सत्रह कहानियां 'तमन्ना खानम' पुस्तक में प्रकाशित हुई हैं। करीब साढ़े पांच दशक के कालखंड में लिखी गई ये कहानियां, हमें समाज के अलग-अलग तबके से ताल्लुक रखने वाली स्त्रियों की जिंदगी से रूबरू कराती हैं। कहीं पुरुषत्व के दंभ से दमित लेकिन फिर भी उसके साथ रहने को विवश भंवरी नजर आती है (औरत),

तो कहीं गणिकाओं के जीवन की त्रासदी भोगती मरजीना की कराह सुनाई पड़ती है (मरजीना)। 'तमन्ना खानम' कहानी में उच्च वर्ग की महिला तमन्ना को अपनी जिंदगी की पेचीदगियों को अपने अंदाज में सुलझाते देखा जा सकता है। बहुत अलग मिजाज की ये कहानियां, कहीं-कहीं उर्दू के मशहूर कथाकार मंटो की याद दिलाती हैं। इन कहानियों में भाषा की रवानगी भी देखने लायक है। *

पुस्तक: तमन्ना खानम (कहानी संग्रह), **लेखक:** हबीब कैफी,
मूल्य: 299 रुपए, **प्रकाशक:** कौटिल्य बुक्स, नई दिल्ली

जरा सोचिए, प्रकृति और जीवन में रंग और सुगंध न हों तो यह दुनिया कितनी नीरस हो जाएगी। ये फूल ही तो हैं, जो हमारी दुनिया को रंगीन बनाते हैं, खुशबू से महकाते हैं। वासंती मौसम में तो बाग-बगीचों में फूलों की बहार ही आ जाती है। ऐसे में आइए, बात करें फूलों की...

वासंती मौसम में बात फूलों की

प्रकृति
शिखर चंद जैन

हर ऋतु में प्रकृति हमारे लिए कई बेशकीमती सौगातें लेकर आती है। प्रकृति की इन सौगातों में कुछ बेहद खूबसूरत फूल भी शामिल हैं। फूलों की यह मनमोहक दुनिया, हमें एहसास कराती है कि जीवन में रंग और खुशबू का कितना महत्व है। हर फूल अपनी जगह खास है, चाहे वह सड़क किनारे खिला छोटा-सा अनाम फूल हो या किसी बगीचे में खिला राजसी गुलाब। अगली बार जब आप किसी फूल को देखें, तो रुककर उसकी मोहक बनावट, उसकी सुगंध के बारे में जरूर सोचें। इन्हें जितना गौर से, प्यार से देखेंगे आपको इनसे उतना ही ज्यादा लगाव हो जाएगा।

संभालें नाजुक फूलों को: फूल हमारी धरती को खूबसूरती तो प्रदान करते ही हैं। इसके अलावा कई कीट-पतंगों को अपना रस, कई औषधीय लाभ और हमें खुशी का अहसास भी कराते हैं। ये मधुमक्खियों और तितलियों को आकर्षित करते हैं, जिससे परागण होता है। इससे पौधे बीज बना पाते हैं और नए पौधे उगते हैं। इस तरह फूल हमारे पर्यावरण का महत्वपूर्ण हिस्सा हैं। इसलिए हमारा भी फर्ज है कि हम उनकी रक्षा करें। ज्यादा कुछ नहीं तो इतना तो कर ही सकते हैं कि हम बिना कारण फूलों को न तोड़ें। जब हम फूल तोड़ते हैं, तो वह पर्याप्त मात्रा में बीज नहीं बना पाते और नए पौधे नहीं उग पाते हैं। फूलों की हिफाजत की शुरुआत अपने घर से करें। घर के गमलों में लगे फूलों वाले पौधों को नियमित तौर पर पानी दें और उन्हें कुछ समय के लिए सूरज की रोशनी में भी रखें। तितलियों, मधुमक्खियों और भौंरों को फूलों पर बैठकर उनका रस चूसने दें। उन्हें भगाने का प्रयास न करें। न भूलें कि इससे उन कीटों को भोजन तो मिलता ही है, उस फूल वाले पौधे का परागण भी होता है। प्रकृति का सम्मान करें और अधिक से अधिक फूलों के पौधे लगाएं ताकि हमारे आस-पास हमेशा फूल महकते रहें।

बात भी करते हैं फूल: फूलों की मूल भाषा सुगंध होती है। ये हम मनुष्यों से अपनी मादक महक के माध्यम से बतियाते हैं। खुशबू से वे अपनी उपस्थिति का एहसास कराते हैं। हमें अपनी ओर आकर्षित करते हैं। सभी फूल अपनी अलग-अलग खुशबू फैलाते हैं। कुछ मधुमक्खियों और तितलियों को बुलाने के लिए और कुछ कीड़े-मकोड़ों को दूर भगाने के लिए। वैसे फूलों के पौधों समेत सभी पौधे, अपनी जड़ों और फंगस के नेटवर्क के जरिए भी एक-दूसरे से जुड़े होते हैं और पोषक तत्वों या पानी की कमी जैसी जानकारी साझा करते हैं। साथ ही हवा में

रसायन छोड़कर भी वे संवाद करते हैं। जब किसी पौधे पर हानिकारक कीट हमला करते हैं तो वह हवा में कुछ रसायन छोड़ते हैं, जिसे आस-पास के दूसरे पौधे महसूस कर लेते हैं और अपनी सुरक्षा के लिए तैयार हो जाते हैं। प्रसिद्ध भारतीय वनस्पति विज्ञानी सर जगदीश चंद्र बोस ने बताया था कि पौधे इलेक्ट्रिक सिग्नल्स के जरिए भी संवाद करते हैं।

हमें इसलिए भाते हैं फूल: फूल हमें इसलिए अच्छे लगते हैं, क्योंकि उनके सुंदर रंग, मनमोहक सुगंध और आकर्षक बनावट हमारे दिमाग में खुशी के हार्मोन (डोपामाइन और सेरोटोनिन) पैदा करते हैं, जिससे हमें शांति और ताजगी महसूस होती है। फूल प्रकृति की सुंदरता, जीवन की सरसता और सकारात्मक ऊर्जा का प्रतीक माने जाते हैं। इतना ही नहीं, ये दवा के रूप में भी महत्वपूर्ण होते हैं। पौराणिक काल में किसी स्थान पर फूलों की मौजूदगी इंसानों को यह संकेत देती थी कि आस-पास पानी, पोषक तत्व और भोजन (फल) उपलब्ध हैं। यही वजह है कि मानव सभ्यता के विकास से ही फूलों से हमारा गहरा जुड़ाव रहा है। फूलों के चटक, खूबसूरत रंग, इनकी मुलायमियत और सिमेट्रिकल बनावट आंखों को बहुत आकर्षित करती हैं।

कम नहीं सांस्कृतिक-प्राकृतिक महत्व: फूलों का सांस्कृतिक और प्रतीकात्मक महत्व भी है। ये खुशी, प्रेम, सम्मान और उत्सव के प्रतीक माने जाते हैं, इसलिए जन्मदिन, शादियों और अन्य शुभ अवसरों पर फूलों को बुके, माला, गुच्छ के रूप में भेंट किया जाता है। वास्तु और ज्योतिष के अनुसार, फूल घर में सकारात्मक ऊर्जा लाते हैं और नकारात्मकता को दूर करते हैं, जिससे खुशहाली आती है। *

आर्थिक लाभ भी कराते हैं फूल

फूलों को पसंद किए जाने की एक वजह यह भी है कि ये लाखों लोगों को आर्थिक लाभ भी कराते हैं। कोई फूल उगा कर, कोई इन्हें बेच कर, कोई सजा कर, कोई निर्यात करके और कोई इनसे सजावटी सामान, मालाएं और बुके आदि बनाकर धनार्जन करता है। भारत में फूलों का कारोबार तेजी से बढ़ रहा है, जिसका बाजार 2022 में लगभग 23,000 करोड़ रुपए का था और 2028 तक 46,700 करोड़ रुपए तक पहुंचने की उम्मीद है। बेंगलुरु, तमिलनाडु और पश्चिम बंगाल प्रमुख पुष्प उत्पादक राज्य हैं। गुलाब, गेंदा, रजनीगंधा और ऑर्किड जैसे फूलों की मांग दुनिया भर में सबसे अधिक है। भारत के फूल संयुक्त अरब अमीरात, अमेरिका, नाइजीरिया सहित कई देशों में भी भेजे जाते हैं।

सफलता के लिए जानना है जरूरी आप क्या नहीं करना चाहते

करियर फील्ड कोई भी हो, उसमें सफल होने के लिए आपका फोकस्ड होना सबसे जरूरी है। फोकस्ड होने के लिए यह जानना जितना जरूरी है कि आपको क्या-क्या करना है, उतना ही जरूरी यह भी होता है कि क्या-क्या नहीं करना चाहते हैं?

सेल्फ मोटिवेशन
कीर्तिशेखर

कई बार जीवन में 'हां' से ज्यादा जरूरी और ताकतवर होता है, 'नहीं'। विशेषकर करियर में सफल होने के लिए अगर शुरू से ही हमें यह पता हो कि हम क्या नहीं बनना चाहते, तो बहुत फायदा होता है।

क्या कहती हैं स्टडीज: करियर में सक्सेस के संबंध में ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी में हुए एक शोध के मुताबिक 60 फीसदी से ज्यादा लोग ऐसे कामों में लगे होते हैं, जिन्हें वो करना पसंद नहीं करते, मगर जोखिम न उठाने के चलते वो ऐसे काम जीवनभर करते रहते हैं। इसके साथ ही एक दूसरा जबर्दस्त शोध इस विषय पर हुआ है कि दुनिया में जितने सफल लोग हैं, उसमें 90 फीसदी से ज्यादा ऐसे हैं, जो उस काम को कर रहे हैं, जिसे वह करना चाहते थे। जी हां, जब हम कोई ऐसा काम करते हैं, जो हमारा मनपसंद होता है, उसमें सफल होने के चांस 10-20 फीसदी नहीं पूरे 100 फीसदी ज्यादा होते हैं। इसलिए सफलता की असली नींव क्या करना है, से नहीं बल्कि क्या नहीं करना है, से पड़ती है। जिस दिन हम यह समझ लेते हैं कि हम जीवन में क्या नहीं करना चाहते, उसी समय हमारे करने वाले कामों की लिस्ट बिल्कुल साफ और सफलता की उम्मीद बिल्कुल स्पष्ट हो जाती है।

'नहीं' क्यों जरूरी है: हम अकसर यह मानकर चलते हैं कि हां कहना सकारात्मक होता है और नहीं कहना नकारात्मक। लेकिन बात अगर स्पष्ट रूप से जिंदगी में करियर की दिशा चुनने की हो तो न कहना ज्यादा सकारात्मक होता है बजाय हर काम के लिए हां कर देने के। 'हां' कहना जितना आसान होता है, उसका नुकसान उतना ही बड़ा होता है। इसलिए जो काम न करना चाहते हों, उसे करने के आसान विकल्प मिलें तो बेहतर है 'नहीं' करना सीखें।

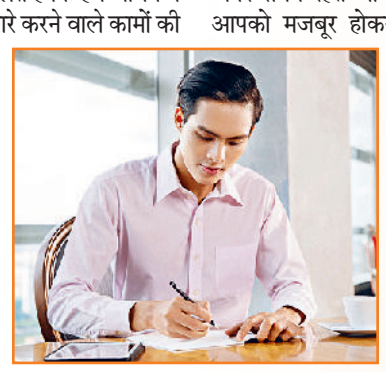

सफलता का पहला स्टेप: सफल लोग पहले यह तय करते हैं कि उन्हें क्या नहीं करना। इसलिए वे कुछ बातों को अमल में लाते ही हैं।

- हर काम और हर मौके पर कूद नहीं पड़ते।
- हर चमकदार विकल्प में नहीं फंसते।
- वे हर सलाह को आदेश नहीं मानते।
- सुनते सबकी हैं, लेकिन करते हैं, जो उनके मन में चल रहा होता है। यानी जो उन्हें सही लगता है।
- ऐसे लोग हर अपेक्षा को अपने सिर पर नहीं ढोते हैं।

दरअसल, सफलता का दर्शन दुनिया में कई नामों से जाना जाता है जैसे- फोकस, प्राथमिकता, सीमाएं और आत्मनियंत्रण। लेकिन सबका मूल एक ही है। आखिर मैं क्या करना चाहता हूं और क्या नहीं करना चाहता हूं?

इसलिए नहीं कहने से डरते हैं लोग: नहीं कहने से ज्यादातर लोग इसलिए डरते हैं, क्योंकि न कहना गैरसामाजिक माना जाता है। न कहने में एक किस्म की बगावत, विरोध होता है। इसलिए लोग न कहने से बचते हैं। लेकिन बचना वास्तव में 'बचना' नहीं होता। अगर न कहने से आप बचते हैं तो आखिरकार उसी न में फंस भी जाते हैं। इसलिए जब करियर के बारे में गंभीरता से सोचें तो अपनी सबसे पहली और जरूरी लिस्ट यह बनाएं कि आप क्या-क्या नहीं करना चाहते हैं? अगर समय रहते आपमें यह स्पष्टता नहीं आई तो एक दिन आपको मजबूर होकर 'नहीं' खुद सिखा देगी। मसलन, मानसिक तनाव के जरिए, असफलता के चलते या पछतावे के रूप में। क्योंकि जो काम आप नहीं करना चाहते और फिर भी करते हैं, तो कीमत तो चुकानी ही पड़ती है। इसलिए बाद में कोई कीमत चुकाने से बेहतर पहले ही चुका लें, क्योंकि शुरुआत में यह सबसे छोटी होती है।

सफलता दिलाएंगे इन्हें 'नहीं' कहना: जिस दिन आप यह तय कर लेते हैं कि मैं अपनी तुलना 'नहीं' करूंगा, उसी दिन आप अपनी प्रतिभा से असफल होने से बच जाते हैं। तुलना सफलता से दूर करती है। सोशल मीडिया के दौर में तो तुलना एक धीमा जहर बन चुकी है।

खुद को हर जगह साबित 'नहीं' करने का निर्णय भी कारगर है। दरअसल, हर जगह अपनी काबिलियत दिखाने की कोई जरूरत नहीं होती, क्योंकि सभी जगहें आपकी सफलता नहीं तय करती हैं। इसलिए अपनी काबिलियत वहीं दिखाइए, जहां वाकई उसकी जरूरत है। लोग क्या कहेंगे, इस डर से अनचाहा फैसला 'नहीं' करना भी जरूरी है। जिस दिन आप फैसले लेने में 'लोग क्या कहेंगे' को माइनस कर लेते हैं तो आपके सारे फैसले सही होने लगते हैं। आजकल एक धारणा बन चुकी है, जो व्यस्त है, वही सफल है। जिस दिन आप इस भेड़चाल को मानने से इनकार कर देंगे, उस दिन से सफलता आपके कदम चूमेगी। रिश्ता भी वही स्वस्थ होता है, जिसमें सम्मान हो और जिसे याद करते हुए भी खुशी हो। जिस रिश्ते को याद करके खुशी न हो, उसे तोड़ना ही बेहतर होता है। *

निवेश, बचत और फाइनेंस से संबंधित अन्य कई पहलुओं को लेकर अकसर लोग असमंजस या भ्रम की स्थिति में रहते हैं। एक सुरक्षित वित्तीय भविष्य के लिए जरूरी है कि आप वित्त से संबंधित इन मिथ और फैक्ट को अच्छी तरह जानें-समझें।

समृद्ध जीवन के लिए समझें फाइनेंस से जुड़े मिथ-फैक्ट

सजेशन
अंजू जैन

हमारे मन में पैसों को लेकर पारंपरिक तौर पर कई ऐसी धारणाएं बैठा दी गई हैं, जो भ्रम होती हैं। घर की फाइनेंसियल कंडीशन अच्छी रखने के लिए ऐसे भ्रमों और उनसे जुड़े सच के बारे में जानना जरूरी है। इससे आप सुखी और समृद्ध रहेंगे।

मिथ: अगर आपकी इनकम ज्यादा है तो आप अमीर हो ही जाएंगे।

फैक्ट: अमीर होना सिर्फ इस बात पर निर्भर नहीं करता कि आप कितना कमाते हैं, बल्कि इस पर भी निर्भर करता है कि आप कितना बचाते हैं और कितनी समझदारी से निवेश करते हैं। मार्गन हाउसेल अपनी किताब 'द साइकोलॉजी ऑफ मनी' में लिखते हैं कि असली धन वह है, जो लोगों को सामने दिखाई नहीं देता बल्कि जिसे आपने अच्छी जगह निवेश कर रखा है। जैसे जमीन-जायदाद, शेयर, सोना, चांदी, एफडी, म्यूचुअल फंड आदि।

मिथ: घर खरीदना हमेशा ही एक बेहतरीन संपत्ति मानी जाती है।

फैक्ट: नहीं, अगर घर का मेंटेनेंस बहुत ज्यादा है, आपके कार्यस्थल से दूर है, डेली शॉपिंग की सुविधा नजदीक नहीं है या इसकी रीसेल वैल्यू बढ़ने वाली नहीं है तो आपके लिए यह नुकसानदायक ही होगा। रॉबर्ट कियासाकी अपनी पुस्तक 'रिच डैड-पुअर डैड' में बताते हैं कि अगर आपका घर आपकी जेब से विभिन्न मदों में पैसा निकाल रहा है तो वह एक लायबिलिटी है, एसेट नहीं। एसेट वह है, जो आपकी जेब में पैसा डाले।

मिथ: निवेश करने के लिए बहुत सारे पैसों की जरूरत होती है।

फैक्ट: निवेश के लिए इसकी आदत और खर्च पर नियंत्रण जरूरी होता है। पुस्तक 'द रिचेस्ट मैन इन बेबीलोन' के अनुसार, अपनी कमाई का कम से कम 10 प्रतिशत हिस्सा खुद के लिए बचाकर निवेश की शुरुआत करना ही सबसे बड़ी रणनीति है। 'कंपाउंडिंग' की शक्ति कम पैसों से भी बड़ा फंड बना सकती है।

मिथ: कर्ज हमेशा नुकसानदायक ही होता है।

फैक्ट: विशेषज्ञ 'अच्छे कर्ज' और 'बुरे कर्ज' में फर्क बताते हैं। अगर कर्ज का उपयोग ऐसी चीज खरीदने के लिए किया जाए, जिसकी वैल्यू बढ़े या जो आय पैदा करे (जैसे बिजनेस लोन), तो वह अच्छा कर्ज है। लेकिन लग्जरी, झूठे दिखावे और फिजूल चीजों के लिए कर्ज लेना गलत है।

मिथ: ज्यादा जोखिम मतलब ज्यादा मुनाफा।

फैक्ट: बिल्कुल नहीं। सफल निवेशक हमेशा जोखिम कम करने पर ध्यान देते हैं। बेंजामिन ग्राहम की पुस्तक 'द इंटेलिजेंट इंवेस्टर' सिखाती है कि अपनी पूंजी की सुरक्षा का ख्याल रखना और सोच-समझकर निवेश का विविधीकरण करना ही असली समझदारी है।

मिथ: रिटायरमेंट का मतलब 'काम बंद और पूरा आराम करना' है।

फैक्ट: हमेशा याद रखें कि खाली दिमाग शैतान का घर होता है। बिना किसी काम के शरीर और दिमाग को जंग लग जाती है। इससे दिमाग परेशानियों और बीमारियों में उलझ जाता है। बेहतर होगा कि रिटायर होने के बाद पसंदीदा काम करें और उससे चार पैसा कमाने की सोचें। टिम फेरिस की पुस्तक 'द 4-आवर वर्कवीक' के अनुसार, वित्तीय स्वतंत्रता का मतलब काम छोड़ना नहीं, बल्कि पसंद का काम करने की आजादी होना है।

मिथ: बजट बनाना खुद पर पाबंदी लगाना है।

फैक्ट: बजट आपको यह नहीं बताता कि आप क्या नहीं कर सकते, बल्कि यह तय करता है कि आपका पैसा कहां जाना चाहिए? यह आपको फिजूलखर्ची से बचाकर आर्थिक आजादी की ओर ले जाता है।

मिथ: अमीर लोग अकसर कंजूस होते हैं।

फैक्ट: अमीर लोग समझदार होते हैं, सोच-समझकर खर्च करते हैं और अपनी इसी आदत के कारण वे अमीर बनते हैं। थॉमस जे. स्टेनली की पुस्तक 'द मिलिनेयर नेक्स्ट डोर' के अनुसार, ज्यादातर करोड़पति साधारण जीवन जीते हैं। वे 'दिखावे' पर नहीं बल्कि 'वित्तीय स्वतंत्रता' पर खर्च करते हैं।

मिथ: पैसा ही सारी बुराइयों की जड़ है।

फैक्ट: यह एक बहुत पुराना भ्रम है। असल में पैसा नहीं 'पैसे का लालच' समस्याओं की जड़ है। पैसा अपने आप में केवल एक जरिया यानी टूल है, जो आपके पास मौजूद संसाधनों को बढ़ाने की क्षमता रखता है।

मिथ: निवेश के लिए मार्केट को 'टाइम' करना (सही समय का इंतजार) जरूरी है।

फैक्ट: 'टाइम इन द मार्केट' (बाजार में समय बिताना) 'टाइमिंग द मार्केट' (बाजार का सही समय चुनना) से कहीं ज्यादा शक्तिशाली है। नियमित रूप से निवेश करना (जैसे एस आई पी के जरिए) और धैर्य रखना ही धन सृजन का सबसे विश्वसनीय तरीका है। शेयर बाजार में 'कब' निवेश करना है, इससे ज्यादा महत्वपूर्ण है कि आप 'कितने समय' तक निवेशित रहते हैं, क्योंकि निरंतरता ही वेल्थ क्रिएशन की असली कुंजी है। बाजार में अधिक समय बिताने से लंबी अवधि में चक्रवृद्धि ब्याज और धैर्य के कारण बेहतर रिटर्न मिलता है, जो पोर्टफोलियो को बढ़ने का मौका देता है। *

(वित्तीय सलाहकार प्रदीप अग्रवाल और चार्टर्ड अकाउंटेंट शुभम तोदी से बातचीत पर आधारित)

'हम दोनों' का गीत 'अभी न जाओ..'

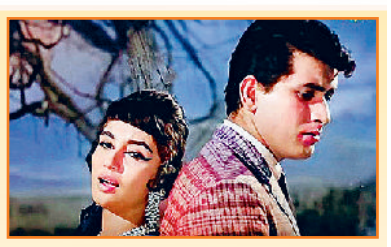

'वो कौन थी' का गीत 'लग जा गले..'

अब क्यों नहीं बन पाते रूहानी सुकून देते गीत

पुराने फिल्मी गीतों को आज भी सुनें, तो ऐसा लगता है मानो किसी ने कानों में मिश्री घोल दी हो। ठहराव और सकून से भरे ये गीत सीधे रूह में उतरते हैं। आज ऐसे गीत कम ही बनते हैं। बॉलीवुड सॉन्ग्स के इस बदले हुए ट्रेंड पर एक नजर।

बॉलीवुड ट्रेंड
डी. जे. नंदन

कई फिल्मी गीत ऐसे होते हैं, जो सीधे दिल में उतरते हैं। बीते दौर के सदाबहार गीतों पर यह बात पूरी तरह लागू होती है। ये गाने सुनने के दौरान ही नहीं बल्कि उसके बाद भी देर तक दिलो-दिमाग में गूंजते रहते हैं। अब ऐसे गीत कम ही बनते हैं। आज ऐसे गीत कम इसलिए नहीं हैं कि प्रतिभा खत्म हो गई है, बल्कि इसलिए कि दिल तक पहुंचने का रास्ता बदल गया है और यह छोटा भी कर दिया गया है। अगर हम आज के बॉलीवुड गीत-संगीत को ध्यान से सुनें, तो साफ पता चलता है कि मंद्र सप्तक यानी नीचे सुर में गाए गए, ठहरे हुए, भावप्रधान और गहराई वाले गीत अब अपवाद बनते जा रहे हैं।

सदाबहार गीतों का दौर: बीते दौर के गीतों को सुनते हुए एक सुकून, एक ठहराव-सा महसूस होता है। मसलन, फिल्म 'वो कौन थी' के इस गीत पर गौर करें, 'लग जा गले...'(स्वर-लता मंगेशकर, संगीत-मदन मोहन) यह गीत सुकून की पराकाष्ठा पर पहुंचाता है। आवाज में न कोई जल्दबाजी है, न दिखावा। बस एक अंतिम आग्रह, जो सरगोशी में भी अमर हो गया। इसी

'अमर प्रेम' का गीत 'चिंगारी कोई भड़के'

तरह फिल्म 'अमर प्रेम' का 'चिंगारी कोई भड़के...'(स्वर-किशोर कुमार, संगीत-आर. डी. बर्मन), किशोर कुमार का यह गीत यह साबित करता है कि मध्यम और नीचा सुर कमजोरी नहीं, गीत की ताकत भी होती है। 'अभी न जाओ छोड़कर...'(फिल्म 'हम दोनों', स्वर-मोहम्मद रफी और आशा भोसले, संगीत-जयदेव) गीत को सुनें तो इस गीत में संवाद है, आग्रह है और प्रेम का सभ्य ठहराव है। सुर इतने संयमित हैं कि आज भी इस गीत को सुनते हुए लोग इसमें खो जाते हैं। ऐसे ही 'कहीं दूर जब दिन ढल जाए...' (फिल्म 'आनंद', स्वर-मुकेश, संगीत- सलिल चौधरी) गीत दिन और जीवन- दोनों के ढलने का संगीतात्मक रूपक है। और इसी तरह 'वो शाम कुछ अजीब थी..' (फिल्म 'खामोशी', स्वर-किशोर कुमार, संगीत- हेमंत कुमार) गीत में सुर सिर्फ चलते ही नहीं, ठहरते भी हैं। यही ठहराव इस गीत की आत्मा है।

क्यों कम बन रहे ऐसे गीत: सवाल यह है कि आज के समय में बीते दौर की तरह सुकूनदायक, रूहानी और ठहराव भरे गीत क्यों नहीं बनते? खोजने पर इसके कई कारण निकलकर सामने आते हैं। जैसे-आज के गीत 'सुनाई देने' के लिए बनाए जाते हैं, 'महसूस होने' के लिए नहीं। तेज बीट्स और ऊंचे सुर तुरंत ध्यान खींचते हैं, जबकि नीचे सुर धीरे और स्थायी असर करते हैं। आज की फास्ट लाइफ, मोबाइल स्पीकर, रील्स और जिम प्लेलिस्ट को ध्यान में रखकर बनाए जा रहे गीतों में वो सुकून, वो ठहराव महसूस करना मुश्किल है। आज के समय में म्यूजिक कंपनियां चाहती हैं पहले 10 सेकेंड में ही हिट और व्यूज मिल जाए। नीचे सुर वाला गीत धीरे खुलता है, इसलिए उसे आज के दौर में 'रिस्की' माना जाता है।

वॉल्यूम-बीट्स को महत्व: बीते दौर में गायक फिल्म के किरदार से पहले गीत के भाव खोजते थे। आज के अधिकतर गाने में एक्टर और उसकी स्क्रीन इमेज का पहले ध्यान रखा जाता है। इस प्रयास में कई बार गायकी पर वॉल्यूम और बीट्स भारी पड़ जाते हैं।

'ऐ दिल है मुश्किल' का गीत 'चन्ना मेरेया'

शास्त्रीय प्रशिक्षण की कमी: नीचे और मध्यम सुर में गाना आसान नहीं होता। इसके लिए रियाज, सांस पर नियंत्रण और धैर्य चाहिए होता है, जो आज के गायकों में कम होता जा रहा है।

कभी-कभार सुनाई पड़ते हैं मधुर गीत: अच्छे, मधुर गीत भले ही आज फिल्म संगीत के हाशिए पर चले गए हैं, लेकिन ये पूरी तरह खत्म नहीं हुए हैं। आज भी कुछ मधुर गीत बन रहे हैं, जो बिना शोर किए दिल में उतर जाते हैं। उदाहरण के तौर पर हम आज के दौर के कुछ बेहतरीन सीधे रूह में उतरने वाले गीतों को देख सकते हैं- फिल्म 'तमाशा' के गीत 'अगर तुम साथ हो..' (गायक-अरिजीत सिंह और अलका याग्निक, संगीत- ए. आर. रहमान) गीत आज के दौर में मधुर गीत की सबसे सशक्त वापसी है। अलका याग्निक की आवाज पुराने दौर की गंभीरता लौटाती है, जबकि अरिजीत का संयम गीत को समकालीन बनाता है। इसी तरह फिल्म 'ऐ दिल है मुश्किल' के गीत 'चन्ना मेरेया..' (गायक-अरिजीत सिंह, संगीत- प्रीतम) का मुखड़ा भले ही ऊंचाई छूता हो, लेकिन गीत का अंतरा और भावात्मक आधार नीचे सुर में ही बैठे हैं। यह गीत इस बात का उत्कृष्ट उदाहरण है कि कम ही सही लेकिन आज भी नीचे सुर के भावप्रवण गीत लोगों को खूब भाते तो हैं ही, फिल्म मेकर्स को व्यावसायिक सफलता भी दिलवा सकते हैं।

बाजार का है दबाव: आज का संगीत उद्योग जिनके हिसाब से चलता है, उनमें से बड़ी संख्या रील देखने वाले युवाओं की है। पहले 10 सेकेंड में रुकने या स्क्रॉल करने वाले श्रोता और दर्शक, जिनकी पसंद पर पैसा, प्रमोशन और ट्रेंड तय होता है- वे तेज, ऊंचे और तुरंत पकड़ में आने वाले सुर चाहते हैं। मध्यम और नीचे सुर का गीत धीरे खुलता है, दो-तीन बार सुनने पर असर करता है, अकेलापन और ठहराव की मांग करता है। आज के संगीत प्रेमियों और इंडस्ट्री को गायक से ज्यादा परफॉर्मर चाहिए। लाइव शो, डांस, स्क्रीन प्रेजेंस भी मायने रखता है। इन्हीं सब पहलुओं को ध्यान में रखकर आज के गीत-संगीत को रचा जाता है। देखा जाए, तो मामला सीधा-सीधा प्रोफेशनल प्रेशर के साथ ही 'डिमांड एंड सप्लाई' का माना जा सकता है। *